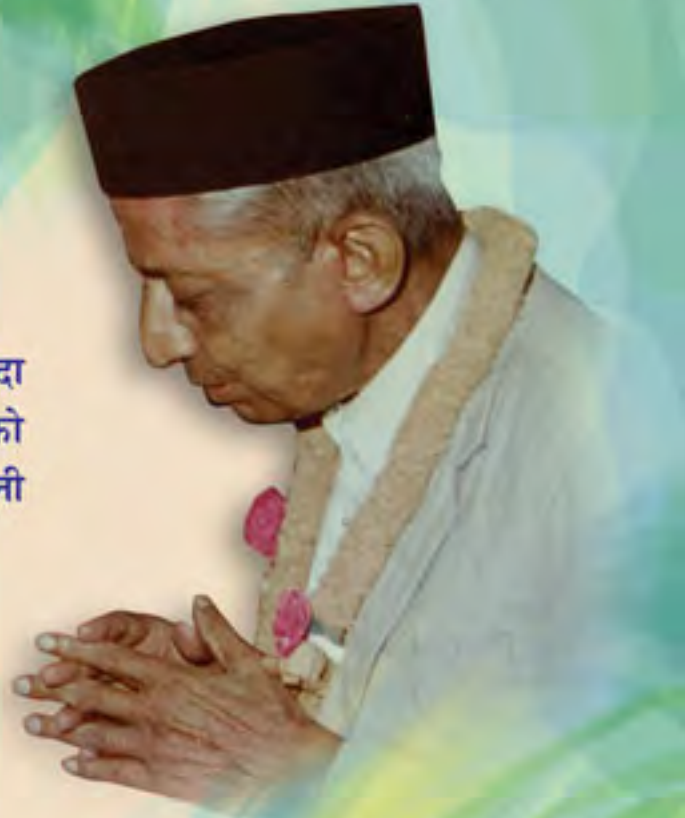


अगस्त 2015

कीमत ₹ 10

दादावाणी

सामायिक में जो दृश्य दिखें, उन्हें जुदा रहकर सिर्फ देखना ही हैं। दृश्यों को ज्ञाता-दृष्टा पद में रहकर देखा यानी साफ हो गए।



अब्रह्मचर्य अब्रह्मचर्य अब्रह्मचर्य

मान मान मान

2h.4k 2h.4k 2h.4k

अभिप्राय अभिप्राय अभिप्राय

कपाय कपाय कपाय



संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : १० अंक : १०

अखंड क्रमांक : ११८

अगस्त २०१५

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडावाज,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये

यू.एस.ए. : १५० डॉलर

यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

सामायिक के विविध प्रकार

संपादकीय

अक्रम विज्ञानी दादा भगवान की कृपा से महात्माओं को आत्मज्ञान की प्राप्ति तो हो गई लेकिन कर्म खपाए बगैर। अब जो माल भरा हुआ है वह तो निकले बगैर रहेगा नहीं न! व्यवहार में निर्बलता खड़ी हुए बगैर रहेगी नहीं। अब जो अतिक्रमण हो जाएँ उनके लिए प्रतिक्रमण कर लें, तो वह दादा की आज्ञा में ही है। लेकिन दोषों को जड़ से विलय करने के लिए दादाश्री ने सामायिक का प्रयोग बताया है। खुद तो शुद्धात्मा हो गए लेकिन फाइल नं-१ में कषाय-विषय रूपी जो दोष बचे हैं, उन्हें सामायिक में अलग रहकर देखेंगे तो वे दोष खत्म हो जाएँगे।

सामायिक में जो दृश्य दिखाई दें उन्हें अलग रहकर सिर्फ देखना है। यदि दृश्यों को ज्ञाता-दृष्टा पद में रहकर देखेंगे तो साफ होकर खत्म हो जाएगा। सामायिक करते वक्त प्रतिक्रमण करने की जरूरत नहीं है। जैसे-जैसे दोष दिखाई देंगे, वैसे-वैसे प्रतिक्रमण होता जाएगा और उतना छुटकारा हो जाएगा। ऐसा हो सकता है कि सामायिक में वही दोष बार-बार दिखाई दें। अंदर परमाणुओं का स्टॉक भरा पड़ा है, जब तक वे खत्म नहीं हो जाता तब तक सामायिक करते रहना है। जैसे-जैसे सामायिक होती जाएगी, वैसे-वैसे कम होता जाएगा।

सामायिक में सभी को एक समान नहीं दिखाई देता, उसमें फर्क होता है। किसी को एकदम प्योर दिखाई देता है, तो किसी को जरा आवरणवाला दिखाई देता है। मोह की छाया पड़ने से क्लियर नहीं दिखाई देता।

सामायिक में एक ग्रंथ को लेकर विलय करने लगें, तब अंदर अन्य ग्रंथियाँ फूटती हैं, विचार आते हैं। और वे उस ग्रंथ पर उपयोग नहीं रखने देते। उस समय जो भी दिखाई दे उसे देखना है। यदि कुछ भी न दिखाई दे तो उपयोगपूर्वक चरणविधि बोलनी चाहिए।

अपने यहाँ तो शुद्ध उपयोग रखने के लिए ही सामायिक करनी है। दादाजी कहते हैं कि ‘जो सामायिक कि कीमत जरा सी भी कम आंकेगा वह भयंकर मार खाएगा।’ सामायिक के लिए यदि अकेले बैठना अच्छा नहीं लगे तो दस-बारह लोग मिलकर बैठेंगे, तो आमने-सामने सामायिक का वातावरण बनेगा। मन शोर मचाएगा, लेकिन हमें सिद्धांत के विरुद्ध नहीं चलना है। मन का चलने देंगे तो सब उल्टा चलता रहेगा। अतः कोई डॉटनेवाला भी चाहिए। अन्य कोई डॉट वह नहीं चलेगा, खुद को ही फाइल नं-१ को डॉटना पड़ेगा। इस तरह उलाहना नहीं देना है कि रोने लगे या डिप्रेस हो जाए, लेकिन यों ही थोड़ा-बहुत कहते रहना है। यदि आईने में देखकर, उलाहना देंगे तो शक्ति बहुत बढ़ जाएगी। यह तो उच्च सामायिक कहलाती है। सभी महात्मा इस बात को अवश्य अपने ध्यान पर ले कि आईने में देखकर उलाहना देनेवाली सामायिक का प्रसंग सिर्फ जानकारी के लिए है। इसके लिए ज्ञानी की आज्ञा जरूरी है, इसलिए नासमझी से अंधा अनुकरण करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

जुदापन की सामायिक के लिए भी दादाश्री ने जो तीन वाक्य दिए हैं, उस अनुसार बोलते रहना है उससे अंदर सब अलग हो जाएगा।

प्रस्तुत संकलन में दादाश्री ने सामायिक पर पूछे गए विविध प्रश्नों के जवाब दिए हैं। साथ ही सामायिक के प्रकारों के बारे में भी बताया है, जो महात्माओं के लिए मोक्षमार्ग के पुरुषार्थ में उपयोगी हो यही अभ्यर्थना है।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

सामायिक के विविध प्रकार

दोषों को धोने के लिए जरूरत है
सामायिक की

प्रश्नकर्ता : अक्रम मार्ग में सामायिक की जरूरत है ?

दादाश्री : दादा की (ज्ञान की) जागृति हो, दूसरी जागृति रहती हो, आज्ञा में रहना आता हो, तब सामायिक नहीं करेंगे तो चलता है।

वैसे तो आपको अब्रह्मचर्य या वैसे सब दोष कहाँ-कहाँ हुए हैं, ऐसी सामायिक लेनी होती है।

अच्छा लगे वह क्रमण, अच्छा न लगे वहाँ
जरूरत है प्रतिक्रमण की

प्रश्नकर्ता : संसार में फाइलों का निकाल (निपटारा) करने में कभी कभार इतने अस्तव्यस्त हो जाते हैं कि प्रतिक्रमण-सामायिक का विचार तक नहीं आता है। वह पोल है क्या ?

दादाश्री : उसे पोल नहीं कहते। पोल उसे कहते हैं कि अपनी इच्छा हो और नहीं करें।

प्रश्नकर्ता : भूलें होने पर अच्छा न लगे, तब प्रतिक्रमण करने पड़ेगें न ?

दादाश्री : कोई बात नहीं। भूलें जान लीं तो बहुत हो गया। प्रतिक्रमण तो किसी को बहुत दुःख हो जाए तब करना है।

अपना यह अक्रम मार्ग, यह कर्म खपाए बगैरवाला मार्ग है, इसलिए यह (कषाय-विषयरूपी)

निर्बलता खड़ी हुए बगैर नहीं रहती। अब जिसे, सिर्फ मानसिक निर्बलता खड़ी हो जाए न, तो उसे सिर्फ मन का प्रतिक्रमण करना है। लंबा प्रतिक्रमण करने की जरूरत नहीं और प्रतिक्रमण किया यानी स्वच्छ हो गया। लेकिन जो माल भरा हुआ है वह निकले बगैर नहीं रहता न! निर्बलता खड़ी हो जाती है फिर भी मन-वचन-काया से प्रतिक्रमण करता है वह गुनहगार नहीं है। बल्कि प्रतिक्रमण करने से वह दादा की आज्ञा में ही है। एकदम से, शक्ति कहाँ से लाएगा? इसीलिए अतिक्रमण तो होगा लेकिन प्रतिक्रमण कर लेना है। फिर भी अपना ज्ञान कैसा है कि चाहे कैसे भी संयोगों में से बच सकता है, इसीलिए वह ज्ञान कहलाता है। ऐसा है कि अपना यह वीतराग मार्ग है, उसमें जब तक पसंद हो तब तक क्रमण होता है। लेकिन कुछ ऐसा हो जाए जो नापसंद हो, तो प्रतिक्रमण करके धो डालना है।

सेटिंग करके लाभ उठाना है

प्रश्नकर्ता : हमारी इच्छा है कि सामायिक करनी चाहिए फिर भी बैठ नहीं पाते हैं, ऐसा किस वजह से ?

दादाश्री : सभी साथ में हों तब बैठना चाहिए। अकेले बैठना माफिक नहीं आता, साथ में हों तो असर होता है। आमने-सामने वातावरण खड़ा होता है।

प्रश्नकर्ता : हम ऐसी सेटिंग कैसे करें कि अधिक से अधिक लाभ उठा सकें ?

दादावाणी

दादाश्री : यदि अधिक लोग इकट्ठे होंगे तो अधिक लाभ उठा सकेंगे। सतसंग का असर होगा न! सामायिक करनी हो तो, दस-बारह लोग मिलकर सामायिक करेंगे तो अच्छी होगी। अकेले बैठने से स्थिरता नहीं आती।

प्रश्नकर्ता : मेरे मन की निर्बलता है, इसलिए मैं अपनी सामायिक में नहीं बैठ पाता।

दादाश्री : सब के संग बैठेंगे तो बैठ पाओगे, उससे आमने-सामने पर्यायी असर होगा। आपको गाँठ पर सामायिक नहीं करनी है। आपको तो मन क्या करता है, उसे देखते रहना है, ऐसा सब देखने में ही समय निकालना है। मन की निर्बलता क्या कर रही है, उसे देखते रहना है। लेकिन कभी न कभी उन गाँठों को विलय तो करना पड़ेगा न? जितना खत्म करेंगे उतना लाभ होगा। इसी जन्म में लाभ होगा! संयम की शक्ति बहुत बढ़ जाएगी। ऐसा मार्ग, ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिलता इसलिए काम *निकाल* लो। चाहे कैसी भी गाँठ हो, वह इस सामायिक से खत्म हो जाती है!

ज्ञान जागृति से होते हैं दोष साफ

प्रश्नकर्ता : हम जवान हैं इसलिए हमारी विषय से संबंधित गाँठ बड़ी होती है। तो यदि हमारा उपयोग सामायिक में रहेगा, तभी उस गाँठ को खत्म कर सकेंगे न?

दादाश्री : हं, देखने से खत्म हो जाती हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, उसे देख-देखकर विलय करना है, इसलिए सामायिक में बैठ पाओ तो अच्छा है न? और इसके बाद ऐसा नहीं लगता कि सामायिक में बैठना है।

दादाश्री : अगर सामायिक में न बैठ पाएँ तो ऐसे जब गाँठें फूटती हैं और विचार आते हैं, तब उन्हें ज्ञान से शुद्ध करें तो उसे जागृति कहते हैं। अंत

में और कुछ न आए तो उन विचारों को 'नहीं हैं मेरा' ऐसा कहेगा तो वह मुक्त हो जाएगा। और विषय का विचार आया या दृष्टि बिगड़ी तो 'नहीं है मेरा' ऐसा कहने से छूट जाओगे। और विषय का विचार आए तब उसे 'नहीं हैं मेरा' कहने से बंद हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यानी उसमें सामायिक की ज़रूरत ही नहीं है कि हमें नियमानुसार एक घंटा बैठना चाहिए।

दादाश्री : सामायिक हो पाए तो अच्छी चीज़ है। ना हो पाए तो ऐसे, जैसे-जैसे दोष उत्पन्न हों वैसे-वैसे निकालते रहना है। जो भी सामायिक की कीमत ज़रा सी भी कम आंकेगा, तो भयंकर मार खाएगा।

शुद्ध उपयोग में रहने के लिए सामायिक

प्रश्नकर्ता : उसमें अभी रुचि ही उत्पन्न नहीं हुई है न कि सामायिक होनी ही चाहिए।

दादाश्री : सामायिक करनी ही है ऐसा लिखकर नहीं दिया है। शुद्ध उपयोग रहे तो फिर हर्ज नहीं है। शुद्ध उपयोग रखने के लिए ही सामायिक करनी है। सामायिक के लिए शुद्ध उपयोग नहीं रखना है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा था कि सरप्लस टाइम में एक सामायिक ऐसी करना कि 'चंदूभाई सुबह से क्या कर रहे थे, ऐसा सब देखना है।' तो इस तरह हमने जो देखा, वह किसमें जाएगा? उसमें फिर सभी दोष भी दिखाई देंगे, वह दोष देखने की प्रक्रिया, प्रतिक्रमण करने की क्रिया...

दादाश्री : हाँ, वह सब आत्मा में जाएगा।

प्रश्नकर्ता : वह शुद्ध उपयोग कहलाएगा?

दादाश्री : हाँ। आत्मा पक्ष में जाता है,

इसलिए फिर शुद्ध उपयोग। शुद्ध उपयोग और आत्मा में रहना, उसमें फर्क इतना ही है कि शुद्ध उपयोग, उपयोगपूर्वक है। शुद्ध उपयोग मतलब सामनेवाला व्यक्ति यदि हमें धौल लगाए, तब भी हमें ऐसा ही रहना चाहिए कि 'वह शुद्धात्मा है'।

प्रश्नकर्ता : और आत्मा में रहना, इसका मतलब ?

दादाश्री : आत्मा में रहना मतलब अभी यह जो बात की वह आत्मा में रहना कहलाएगा।

प्रश्नकर्ता : यानी आँखे बंद करके अंदर ये सब दोष देखते हैं, वह सब ?

दादाश्री : ये सब आत्मा में रहना कहलाता है।

दोष होते हैं परतवाले

प्रश्नकर्ता : सामायिक में जो दृश्य दिखाई देते हैं उस समय उनका प्रतिक्रमण कैसे करना है ?

दादाश्री : सामायिक में जो दृश्य दिखते हैं उनका प्रतिक्रमण नहीं होता। जो दिखाई देते हैं वे तो गए। प्रतिक्रमण तो, जो दिखाई नहीं देते (दृष्टा होकर देखा नहीं, दूसरे को दुःख हुआ), उनका करना होता है। दृश्य देखा वह तो गया। देखा यानी स्वच्छ हो गया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वे फिर से दिखाई देते हैं न ?

दादाश्री : फिर से दिखाई देते हैं, वे दूसरे हैं। प्याज़ जैसे, देखने से एक परत चली जाती है। लेकिन वापस प्याज़ ही दिखाई देती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वही के वही दृश्य दिखाई देते हैं न ?

दादाश्री : दृश्य वही के वही नहीं दिखाई देते, दो बार नहीं दिखाई देते।

प्रश्नकर्ता : किसी जीव के साथ बैर हो, उसका प्रतिक्रमण कर लिया हो, तो फिर से उसी जीव का प्रतिक्रमण करना बाकी रहता है ?

दादाश्री : हाँ, अपना बड़ा दोष था, और प्रतिक्रमण करने से एक परत टूटी। दूसरी लाखों परतें बाकी रहीं। उसकी परतें गहरी हैं। यानी जब तक पूरा नहीं हो जाता तब तक प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। किसी व्यक्ति के साथ महीने-दो महीने के प्रतिक्रमण से सब पूरा हो जाता है, हमारा हिसाब खत्म हो जाता है और किसी व्यक्ति का हिसाब पूरी ज़िंदगीभर चलता रहता है, ग्रंथि बहुत बड़ी हो तो। प्याज़ की एक परत हटने पर वापस प्याज़ ही दिखाई देती है न ? इसी तरह इन दोषों में भी परतें होती हैं, लेकिन एक बार प्रतिक्रमण करने से एक परत हट जाती है। फिर उसका आपको दूसरी बार नहीं करना पड़ता। एक का प्रतिक्रमण एक ही बार करना पड़ता है।

खत्म होने तक अंदर दोष दिखाई देते हैं

प्रश्नकर्ता : जो गलतियाँ हो गई हैं, वे हमें बार-बार सामायिक में दिखती रहती हों तो ?

दादाश्री : जब तक दिखती रहें, तब तक उनके लिए क्षमा माँगनी चाहिए, क्षमापना करनी है, उस पर 'वह' पछतावा करना चाहिए, प्रतिक्रमण करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अभी सामायिक में बैठे, और दिखा हो, फिर भी बार-बार क्यों आते हैं ?

दादाश्री : वे तो आएँगे न, अंदर परमाणु होंगे तो आएँगे न ! उसमें हमें क्या हर्ज है ?

प्रश्नकर्ता : ये आते हैं, इसका मतलब यह कि अभी तक धुला नहीं है।

दादाश्री : नहीं, वह माल तो अभी बहुत समय तक रहेगा। अभी तो दस-दस साल तक रहेगा, लेकिन आपको सारा निकालना है। अंदर स्टॉक में

दादावाणी

जो परमाणु भरे पड़े हैं न, वे सब खाली करने पड़ेंगे।
वर्ना उनके आधार पर वह आनेवाला जन्म बाँधता है।

प्रश्नकर्ता : एक बार प्रतिक्रमण कर लें तो भी
वापस आता रहेगा ?

दादाश्री : बहुत मोटा हो तो आता रहेगा।
लंबा हो तो अंत तक रहता है। इसीलिए फिर से
करना है और खत्म होने तक करना है। और उस
घड़ी इस सामायिक में आत्मा का चारित्र देखने मिला
न हमें! उसे चारित्र कहते हैं, प्योर चारित्र कहलाता
है। देखनेवाला आत्मा है। ये ज्ञेय, देखनेवाला स्पष्ट
आत्मा और आप ज्ञाता हो। अगर ज्ञेय-ज्ञाता के संबंध
से देखा जाए तो वह, निश्चय सामायिक कहलाती है।

उस (सामायिक) में तो सब (दोष) दिखाई
देते हैं। जैसे-जैसे दिखाई देंगे, वैसे-वैसे कम होते
जाएँगे। ये तो सब पहले से ही अंदर पड़े थे न? वे
कर्म अब फल देने के लायक नहीं रहे।

प्रश्नकर्ता : अब दोबारा सामायिक में बैठेंगे
तब ये नहीं दिखेंगे न?

दादाश्री : दिखेंगे, दूसरे दिखेंगे।

प्रश्नकर्ता : वही दिखेंगे? वही फिर से आएँगे
न?

दादाश्री : कैसे आएँगे?

प्रश्नकर्ता : कुछ जो बड़े बड़े दोष हुए हों,
वही दोबारा दिखेंगे, बाकी के नहीं दिखेंगे।

दादाश्री : कई लोगों के चीकणे (गाढ़) होते
हैं तो दोबारा आते हैं।

जितने प्रतिक्रमण, उतना ही छुटकारा

जैसे-जैसे सब दोष दिखते जाएँगे वैसे
प्रतिक्रमण होंगे, तब छूट जाओगे। आपके जितने
प्रतिक्रमण हो चुके उतना छुटकारा हो गया। जितने

बाकी रहे, उतने रह गए। उनके लिए फिर से
प्रतिक्रमण करते ही रहने हैं।

प्रश्नकर्ता : हम सारे जगत् के जीवों से क्षमा
माँग लें तो वह प्रतिक्रमण कहलाएगा न?

दादाश्री : प्रतिक्रमण हुआ ऐसा कब कहलाता
है? एक-एक का करते हैं, तब।

प्रश्नकर्ता : हम ने ज्ञान लेने से पहले जो कर्म
किए हैं, अब उनका हिसाब लगाने बैठे हैं कि ये
किए हैं। वे कब प्रकाश में आएँगे?

दादाश्री : वे याद आएँ तो प्रतिक्रमण करना
है। जितने याद आएँ उतने प्रतिक्रमण करने हैं। नहीं
तो फिर यहाँ पर हम सामायिक करवाते हैं उस दिन
बैठना है। वह पूरा एकजोक्त करना है। उस दिन कुछ
धुल जाएगा। ऐसा करते-करते सारा धुल जाएगा।

दोष देखने से ही हो पाएँगे शुद्ध

प्रश्नकर्ता : दादा, जब-जब चंदू को शुद्धात्मा
के तौर पर, ज्ञाता-दृष्टा के तौर पर देखता हूँ, तब-
तब चंदू के अंदर काफी कमियाँ दिखाई देती हैं।

दादाश्री : हाँ, लेकिन कमियाँ दिखाई देती हैं
न, इसलिए शुद्धात्मा संपूर्ण दशा में है, वर्ना कमियाँ
दिखाई ही नहीं देंगी। पहले तो कमियाँ दिखाई ही
नहीं देती थीं, अब कमियाँ दिखाई दे रही हैं यानी
शुद्धात्मा संपूर्ण स्वच्छ हो रहे हैं इसलिए कमियाँ
ज्यादा दिखाई दे रही हैं।

प्रश्नकर्ता : यदि चंदू ने कुछ किया तो क्या
शुद्धात्मा को पता चल जाता है कि यह चंदू की
गलती है? शुद्धात्मा यह पता लगाने का प्रयत्न करता
है?

दादाश्री : सही बात है। शुद्धात्मा (ऐसा करता
है)। शुद्धात्मा यानी शुद्धात्मा का कहना है..... हमें।
जब से आप खुद शुद्ध होने लगे, तब से शुद्धात्मा

दादावाणी

प्योर होने लगा। वर्ना चंदू का एक भी दोष कहाँ दिखाई ही देता था? मुश्किल से एक-दो बड़े-बड़े दिखाई देते थे। बाकी तो हज़ारों, लाखों दोष अंदर भरे पड़े हैं। निरे दोषों के ही पुतले हैं ये सारे। अर्थात् जितने दोष देखे उतने चले जाते हैं। और भी जितने ज़्यादा दिखाई दें, उतना अच्छा।

प्रश्नकर्ता : अब तक मैं, यह क्यों हो रहा है, और मेरी क्या गलती है, ऐसा देखता था। अब ऐसा देखना है कि होगा, और ज़्यादा होगा।

दादाश्री : तो वे शुद्ध होकर चले जाएँगे। (खत्म हो जाएँगे) यानी निबेड़ा आ जाता है। ये ही फाइलें हैं, इन्हीं को फाइल कहते हैं। इन फाइलों का निकाल कर देना है।

शुद्धात्मा होकर, ज्ञाता-दृष्टा रहकर चंदू की खामियाँ देखते रहो। ज़्यादा दिखाई दें तो फिर अगर प्रतिक्रमण नहीं करोगे तो भी हर्ज नहीं है। जितने दिखाई दिए, उतने गए। जितने नहीं दिखाई दिए, उतने फिर से देखने पड़ेंगे। क्योंकि वे क्या कहते हैं? 'आप तो शुद्धात्मा हो गए लेकिन हमारा क्या? हम तो शुद्ध ही थे, आपने हमें बिगाड़ा है।' तब यदि आप कहो कि 'तो अब हमें क्या करना है?' तब कहेंगे कि 'हमें शुद्ध करके निकालो।' अर्थात् आपको उन्हें देखना है, दोषों को देखोगे तो वे शुद्ध होकर चले जाएँगे। यही इसका उपाय है। और यही आत्मा की सामायिक। आत्मा का शुद्धपना, स्वभाव बताता है।

दिखा गलत, खुद का सही माना हुआ रूप

प्रश्नकर्ता : कई बातों में ऐसा लगता था कि मैं सही हूँ लेकिन अब सामायिक में खुद के ही दोष दिखाई दिए। व्यावहारिक बातों में, खुद के ही दोष दिखाई दिए, जिन्हें सही मानता था।

दादाश्री : जिन्हें सही मानते थे वे गलत हैं,

ऐसा दिखाई दिया। ठीक है। लेकिन ऐसा कुछ अनुभव तो हुआ न?

प्रश्नकर्ता : पहले जिन बातों में दूसरों के दोष देखते थे, उसके बजाय उनमें खुद का ही दोष दिखाई दिया।

दादाश्री : खुद का दोष दिखाई दिया। इस तरह का अनुभव हुआ न! और किसी को अपने अनुभवों का वर्णन करना हो, तो उठकर वर्णन करो।

कितना आश्चर्य, पूरी ज़िंदगी का दिखाई देता है। आश्चर्य ही कहलाएगा न? और वह भी एक्जैक्ट, जो भी हुआ वह सारा, साथ में कौन-कौन था ऐसा सब।

प्रश्नकर्ता : उन घटनाओं में खुद के सूक्ष्म क्रोध-मान-माया-लोभ कैसे काम कर गए, वह भी दिखाते हैं, दादा।

दादाश्री : हाँ, उसमें अंदर क्या-क्या हुआ, वह पूरा स्वांग। अहंकार और बुद्धि का जितना स्वांग है उतना पूरा स्वांग बताता है। किसी को धोखा देकर भोग लिया हो तो वह भी दिखता है। समझाकर किया हो तो समझाकर दिखाता है। जैसा किया हो, वैसा दिखाई देता है। लेकिन दिखाता अवश्य है। और फिर ताज़ा-फ़ेश होता है जैसे कि कल ही हुआ हो न, वैसा दिखाता है।

प्रश्नकर्ता : अब बुद्धि खत्म हो जाए ऐसे प्रतिक्रमण बताइए।

दादाश्री : उसके प्रतिक्रमण नहीं होते। वैसा न हो, ऐसी इच्छा रखनी चाहिए। 'बुद्धि होनी चाहिए' ऐसी इच्छा रखने से बुद्धि खड़ी हो गई है।

जब दिखाई न दे तब क्या?

(जब सामायिक कर रहे थे तब) फुरसत नहीं (मिल) रही थी न? फुरसत मिली थी भाई?

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : ज़रा सी भी नहीं। पीछे (दोषों की) लाइन लगी थी। आज तो टाइम कम पड़ गया? खत्म नहीं हो पाया, पिक्चर खत्म नहीं हो पाई?

दादाश्री : हाँ, तुम्हारी तो पीछे लाइन लगी थी? इनकी (दोषों की)। क्यू लगी हो ऐसा कभी देखा नहीं न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : अभी तो नया-नया है। शायद किसी से ठीक से ना हो पाया हो, लेकिन यह बहुत सुंदर उपाय है।

अब यह जो दिखाई देता है, उसमें सब का अलग-अलग होता है। किसी को बिल्कुल प्योर दिखाई देता है। किसी को ज़रा आवरणवाला दिखता है।

प्रश्नकर्ता : सामायिक में पहले कुछ समय में, पंद्रह-बीस मिनट में सारी फिल्म खत्म हो गई।

दादाश्री : हाँ, वह खत्म हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : तो बाद में क्या करना है?

दादाश्री : बाद में यों ही स्थिर रहना है, उसमें कोई हर्ज नहीं है। या फिर किसी भी दूसरे उपयोग में रहना है। यदि भारी आवरण आ जाए न तो दिखाई नहीं देता।

प्रश्नकर्ता : बाद में उस फिल्म को मैंने दो बार देख लिया।

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं है, अच्छा है। जितना देखा जाए, उतना धोने का टाइम मिलता है न! यह तो शुद्ध-स्वच्छ-प्योर आत्मा है।

जिस किसी को ठीक दिखाई दिया हो, वह उँगली ऊँची करना। आपको भी दिखाई दिया? पाटीदार को भी दिखाई दिया?

प्रश्नकर्ता : हाँ, स्पष्ट दिखाई दिया।

दादाश्री : साँप मिल जाए तो उसे मारे बगैर जाने नहीं देते, ऐसे पाटीदार, उन्हें भी दिखाई दे, तब वह कैसा आत्मा प्राप्त हुआ है!

यह वर्ल्ड का आश्चर्य है! एक घंटे पुणिया श्रावक की सामायिक! जिसके लिए श्रेणिक राजा का राज्य दलाली में जाता है, तो उस एक घंटे की कीमत कितनी? दादा ने यह क्या दिया है, वह आपको समझ में आया न?

जो ग्रंथि फूटे, उसे देखना है

प्रश्नकर्ता : किसी एक ग्रंथि पर सामायिक करते वक्त कुछ और दिखाई दे और वह ग्रंथि दिखाई देनी बंद हो (रुक) जाए, तो वह क्या है?

दादाश्री : वे भले ही आए या जाए। यदि जानवर आते-जाते रहें, तो उससे थोड़े ही खुद को दिखाई देना बंद हो जाता है?

ग्रंथियाँ हैं, ऐसा पता चलता है लेकिन व्यवहार में समझ में नहीं आ पाता। इसलिए हम उस ग्रंथि को सामायिक में देखने को कहते हैं। एक ग्रंथि को लेकर सामायिक में पिघलाने जाते हो लेकिन भीतर दूसरी गाँठें फूटती हैं, विचार दिखते हैं, जो उस गाँठ पर उपयोग नहीं रखने देते। तब जो दिखाई देता है उसे देखना है।

प्रश्नकर्ता : जब हम सामायिक में बैठे हों और मन में गलत विचार आए, तो उसी समय प्रतिक्रमण करना है?

दादाश्री : हाँ, उसी समय करना है सब और वह 'हमें' नहीं करना है। 'हम' जाननेवाले हैं और चंदूभाई को भान (होश) नहीं है, चंदूभाई कर्ता हैं। इसलिए कर्ता को हमें ऐसा कहना है कि 'ऐसे करो, आपने ऐसा क्यों किया?' 'हम' ज्ञाता हैं और वह कर्ता है।

आत्मा की क्रिया से दिखाई देता है

प्रश्नकर्ता : खुद की फिल्म देखने में मन लगे, अच्छा लगे, उसमें कुछ बुरा किया है या कुछ गलत हुआ है, ऐसे भाव नहीं होते तो वह कैसा दिखता है ?

दादाश्री : सामायिक में उस घड़ी मन होता ही नहीं है। मन का अस्तित्व ही नहीं होता। यह तो देखना ही था। अच्छा या बुरा ऐसा कुछ देखना नहीं है, खाली देखना ही था।

प्रश्नकर्ता : देखकर ऐसा नहीं कहना है कि माफी माँगता हूँ ?

दादाश्री : प्रतिक्रमण अलग चीज है। लेकिन ऐसे रुका हुआ था, ऐसा नहीं कहना चाहिए। इसमें रुकनेवाला कोई है ही नहीं। यह मन की क्रिया नहीं है, यह आत्मा की क्रिया है। यह आत्मा की क्रिया है। ऐसा दिखता जरूर है, लेकिन उससे मन को कुछ लेना-देना नहीं है।

प्रतिक्रमण के समय माइन्ड एबसेन्ट रहता है, और कुछ नहीं। विचारों के साथ ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध, प्रतिक्रमण के समय विचार आते ही नहीं, विचार बंद हो जाते हैं। और यदि किसी को विचार आएँ, तो उन्हें देखना है। वे ज्ञेय हैं और 'हम' ज्ञाता हैं।

यह तो आत्मा से ही आत्मा की सामायिक है। बाहरवालों के साथ तो स्वतंत्र, कुछ लेना-देना नहीं है। कुछ भी लेना-देना नहीं। मन के साथ भी लेना-देना नहीं है। मन-बुद्धि सबकुछ आइडल (निष्क्रिय)।

मोह कम हो तब दोषों का पता चलता है विस्तार से।

प्रश्नकर्ता : पिछले जन्म में हमने कितने अतिक्रमण किए, कैसे किए, क्या किया, वह तो हमें पता ही नहीं है। उनका कैसे पता चलेगा ?

दादाश्री : पिछले जन्म से हमें क्या काम ? अभी जितने अतिक्रमण करते हो न ? उन्हें धोना है।

प्रश्नकर्ता : इस जन्म में कितने अतिक्रमण किए, उन्हीं का कुछ पता नहीं चलता न ?

दादाश्री : वह सब तो, सामायिक में बैठें और उस तरफ का झुकाव रहे कि मुझे ये सब ढूँढ निकालना है, तो सब मिल जाएगा, ब्योरेबार मिल जाएगा। यदि विधिपूर्वक अंतर्मुखी हो जाएँ, तो आत्मा अपना काम शुरू कर ही देता है।

प्रश्नकर्ता : सारी भूलें समझ में आती हैं लेकिन पहले सब कह देते हैं, बाद में ख्याल आता है कि 'यह मेरी भूल हो गई, मुझे नहीं कहना चाहिए था।'

दादाश्री : उसके लिए दो-पाँच सामायिक कर लेना और उनका फल तो देखना !

प्रश्नकर्ता : दादा, जब सामायिक या ऐसा कुछ करते हैं, तब हमें छोटे-मोटे दोष तो पता चलते हैं, लेकिन बड़े दोषों का पता क्यों नहीं चलता ? उन्हें कैसे देखना है ?

दादाश्री : अंदर तो वे सब दिखाई ही देते हैं, लेकिन मोह के कारण आपको दिखाई नहीं देते। मोह की छाया पड़ने से आपको दिखाई नहीं देते। जैसे-जैसे मोह कम होगा वैसे-वैसे दिखाई देंगे।

देखनेवाला कौन ? आत्मा

प्रश्नकर्ता : दादा, जैसे कई बार मूवी देखते हैं न, तब हम पहले से फिल्माए गए दृश्य देखते हैं न, वैसे ही मुझे दृश्य दिखाई देते हैं कि अब ऐसा हो रहा होगा, फिर ऐसा होगा अथवा ऐसा होगा और इस तरह अच्छा समय व्यतीत होगा, कई बार हमें ऐसा सब दिखाई देता है। ऐसा मुझे कई बार आभास होता है और यदि वैसा कुछ हो जाए, तो मुझे आश्चर्य नहीं होता क्योंकि ऐसा लगता है कि

‘ओहो! यह तो मैंने देखा था ऐसा!’ मुझे कई बार होता है ऐसा।

दादाश्री : ऐसा है कि आत्मा पर से आवरण टूटने पर किसी-किसी को कोई दृश्य दिखाई देता है, किसी को कुछ और दिखाई देता है। जिस तरफ का आवरण टूटता है, उस तरफ का दिखाई देता है। यदि आवरण पतला हो तो जल्दी टूट जाता है। किस जगह पर सूर्य दिखाई देगा, ऐसा कोई नियम नहीं है, जहाँ बादल हल्के होते हैं वहाँ दिखाई देता है।

दिखाई देना शुरू कब होता है? तू जब सारी सामायिक करेगा न, तो अब से लेकर बचपन तक का सब दिखाई देगा। यों ही याद करने जाओगे तो अभी कुछ भी याद नहीं आएगा लेकिन दिखाई देगा, तब समझ लेना चाहिए कि दिखाई देने की शुरुआत हो गई है। तुमने सामायिक की है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, की है दादा।

दादाश्री : हाँ, लेकिन आपको दिखाई दे रहा था?

प्रश्नकर्ता : सारा क्लियर।

दादाश्री : हाँ। इसी को ‘देखना’ कहते हैं। देखनेवाला कौन है? तो आत्मा के सिवा अन्य कोई देखनेवाला है ही नहीं। देखने की शक्ति तो है लेकिन पहले कभी ऐसे देखने बैठे थे? देखने जाओ तो कुछ नहीं दिखता लेकिन अब तो साफ दिखाई देता है।

प्रकट के ध्यान से बनता है निज का ध्याता

अभी तो और क्लियर होगा, तब ज्यादा समझ में आएगा।

प्रश्नकर्ता : क्लियर करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : लो! सत्संग में पड़े रहना होगा, निरंतर आज्ञा का पालन करना होगा। घर बैठे हुए भी

आज्ञा का पालन कर सकते हैं। जो आज्ञा पालन कम कर पाते हैं, उन्हें एक सामायिक करनी चाहिए। ‘दादा भगवान ना असीम जय-जयकार हो’ ऐसे पचास मिनट के लिए सामायिक करनी है बस, और अगर अच्छी तरह से पूरी आज्ञा पालन कर सकते हैं, तो फिर कोई हर्ज नहीं है।

‘दिस इज द कैश बैंक,’ यह जो वाक्य है न! कैश बैंक यानी ‘दादा भगवान’ आपके अंदर अव्यक्त रूप से हैं और मेरे अंदर व्यक्त, प्रकट हो चुके हैं। यदि प्रकट का ध्यान करेंगे न, तो खुद का भी प्रकट होता रहेगा। आनंदघन जी ने गाया है कि ‘प्रकट तत्व ना ध्यावता, निज तत्व नो ध्याता थाय रे’ (प्रकट तत्व का ध्यान करने से, निज तत्व का ध्याता बनता है)। आप यह बोलो न रोज़! कब बोलना है? रात को खाना खाने के बाद पत्नी-बच्चे सभी को बिठाकर, आपको यह बोलना है और वे भी साथ में बोलेंगे, इससे आपके अंदर भी प्रकट होते रहेंगे, व्यक्त होते रहेंगे। प्रकट का ध्यान करने से अंदर व्यक्त होते जाएँगे! सिर्फ यही एक वाक्य, ‘दादा भगवान ना असीम जय-जयकार हो’ कैश ही है। तुरंत ही फल देता है। आनंद-वानंद सभी तरह से। और जिस दिन अंदर पचास मिनट बोलोगे न, उस दिन पूरी सामायिक करोगे... (तब, उसका अनुभव होगा)

तब रहना है चरणविधि के उपयोग में

प्रश्नकर्ता : जब सामायिक करता हूँ, तब कई बार मुझे कुछ दिखाई नहीं देता, सिर्फ अंधेरा ही दिखाई देता है। लकीरें या धाराएँ, या ऐसा ही कुछ दिखता रहता है। वह क्या है, दादा?

दादाश्री : यों तो कुछ भी दिख सकता है न! यदि उपयोग न रहे तो सामनेवाली चीज़ ज्ञेय के रूप में नहीं दिखती, तब सभी उल्टी-सीधी चीज़ें दिखाई देती हैं। ऐसा तो रहेगा ही न? देखनेवाले को कुछ न कुछ तो दिखेगा ही न?

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : यों ही बड़ी ज्वाला दिखती है, छोटी दिखाई दे। छोटी-बड़ी होती रहती है। कभी स्थिर रहती है।

दादाश्री : हाँ, ऐसा सब तो दिखेगा। ये सब चित्त के चमत्कार दिखाई देते हैं। उसका कोई मतलब ही नहीं है न। कोई ज़रूरत ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर उस समय क्या करना चाहिए?

दादाश्री : तो फिर आपको चरणविधि बोलनी है। कंठस्थ है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, जी।

दादाश्री : अच्छी तरह से, खुलकर बोलनी है, तो बहुत हो गया।

आत्मा का उपयोग, सामायिक में

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपने त्रिमंत्र पढ़वाया था न कि आँखें बंद करके सामायिक करना और पढ़ना तो उस तरह से हमने किया था। अब सत्संग में हम उसी तरह से वैसी सामायिक करनेवाले हैं।

दादाश्री : बहुत अच्छा और त्रिमंत्र का पूरा अभ्यास करते हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी पूरा त्रिमंत्र कैसे पढ़ना चाहिए, यह सब की समझ में आ गया है और अब तो सब बच्चे भी बैठते हैं सामायिक करने।

दादाश्री : उसे आत्मा का उपयोग कहा जाता है। मॉटेल याद आए तो उपयोग मॉटेल में चला जाता है जबकि इसमें आत्मा का उपयोग रहता है। यदि चंदूभाई का उपयोग मॉटेल में जा रहा है तो आप जुदा रह सकते हो, लेकिन यदि जागृति रहेगी तो।

क्रमिकमार्ग में तो सभी लोग पूरा दिन सारा

जंजाल छोड़कर एक जगह पर सामायिक करने बैठते हैं, लेकिन वह व्यवहारिक सामायिक कहलाती है। वहाँ बैठकर यदि मन में दुकान का विचार आए तो उसे हटाते रहते हैं कि, 'तू क्यों आया?' हर एक विचार को धक्का मारकर हटाते रहते हैं। अर्थात् कुछ भी टच नहीं होने देते।

प्रश्नकर्ता : तो क्या आत्मा के उपयोग में ही रहते हैं?

दादाश्री : हाँ, जो उपयोग में रहता है वह व्यवहार आत्मा है। उनके पास सच्चा (वास्तविक) आत्मा नहीं है इसलिए अहंकार के उपयोग में रहते हैं। जबकि यहाँ निश्चय आत्मा के उपयोग में रहना है, अपना शुद्धात्मा। और कुछ नहीं, सिर्फ 'देखना' है। मन में जो भी विचार आएँ उन्हें देखना है, कोई और विचार आएँ तो उन्हें देखना है, उसे सामायिक कहते हैं। पूरे दिन समता रहे वह सामायिक। खुद उपयोग में ही रहना, वह सामायिक। इस संसार में व्यवहारिक उपयोग रहने को भी सामायिक कहते हैं और यहाँ पर निश्चय उपयोग में रहने को भी सामायिक कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : मैं जब सामायिक में अपने दोषों को देखने के लिए बैठता हूँ, तब जैसे औरों को खुद के दोष दिखाई देते हैं, वैसे मुझे मेरे दोष नहीं दिखाई देते लेकिन ऐसे ब्लैंक दिखता रहता है तो ऐसा क्यों होता है?

दादाश्री : दिखाई देंगे। दोबारा कोई करवाएगा न तब दिखाई देंगे। ये सब पद्धति अनुसार देखना है। दोष देखने का (आवरण) अभी खुला नहीं है, जब वह खुल जाएगा तब फिर से दिखाई देंगे। मेरी उपस्थिति में करवाऊँगा मैं।

समझकर प्रेक्टिस की ज़रूरत

प्रश्नकर्ता : दादा, ये दोष सभी को दिखाई देते

हैं या ऐसा भी होता है कि किसी-किसी को नहीं दिखाई देते ?

दादाश्री : हाँ, ऐसा होता है न। इसके लिए उसकी प्रेक्टिस हो तब, एक बार सीख लेना पड़ेगा। अंदर कुछ ढूँढना नहीं है अर्थात् खुद को क्या करना है, वह याद रहना चाहिए। खुद ढूँढने जाएगा तो आत्मा हट जाएगा।

प्रश्नकर्ता : मुझे तो ऐसा कुछ भी नहीं दिखाई दिया।

दादाश्री : हाँ, सिर्फ आपको ही नहीं, ऐसा तो कई लोगों को दिखाई नहीं देता। लेकिन सब कहते हैं कि दिखाई देता है। इसलिए आप ऐसा पुरुषार्थ करो कि सामायिक में कुछ दिखाई दे। 'मैं देख रहा हूँ,' ऐसा लगा, तो फिर बिगड़ जाएगा.....

'मैं शुद्धात्मा' ऐसा बोलते ही तुरंत (फाइल-१ से) कहना है कि 'आप देखो', तो दिखाई देना शुरू होगा और दिखाई देगा।

दोष होते ही दिखाई देते हैं, ज्ञानदृष्टि से

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लिया, ज्ञान से दृष्टि बदल गई। अब तो ऐसा हो गया न कि अगर एक भी दोष हो जाए तो तुरंत दिखाई देगा।

दादाश्री : वे तो दिखेंगे। लेकिन ये तो जो पहले के, कम उम्र से (अंदर) पड़े हुए हैं, उनके लिए प्रतिक्रमण करना है।

प्रश्नकर्ता : वह तो मैं समझ गया दादाजी, लेकिन जब यह प्रक्रिया चल रही होती है। तब तुरंत सब दिखाई देता है।

दादाश्री : इसमें तो आपको हर एक दोष दिखाई देगा। आप हल ले आओ। (लेकिन उसमें) कोई परेशानी नहीं है न? उसमें तो कोई कमजोर (कच्चा) पड़ता ही नहीं है न?

पिक्चर की तरह दिखाई देता है यानी क्या ?

प्रश्नकर्ता : (सामायिक में) चंदू कैसा लग रहा था वह भी दिखाई देता है। और यदि ऐसा कुछ दिखाई नहीं दे, तो अंधेरा सा लगता है।

दादाश्री : दिखाई नहीं दिया? सभी को दिखाई दिया वैसा तुम्हें भी दिखाई दिया, लेकिन तुम्हें पता नहीं चलता। समझ में आ रहा है?

प्रश्नकर्ता : पिक्चर दिखाई देती तो उसका तो पता चल जाता न! यहाँ तो कुछ भी नहीं दिखाई देता। आँख बंद करते ही अंधेरा।

दादाश्री : यह तुम्हें कैसे पता चला ?

प्रश्नकर्ता : पता तो चलता है कि अंधेरा है या कुछ और दिखाई दे रहा है।

दादाश्री : पहले दिखाई देते थे ?

प्रश्नकर्ता : दादा, ये दोषों का तो पता चलता है कि कल ऐसा हुआ था, उससे पहले ऐसा हुआ था, उससे पहले यह भूल हो गई थी।

दादाश्री : वह कैसे पता चला ? दिखाई देने के सिवा अन्य कोई रास्ता नहीं है।

'जानने' को ही कहते हैं 'दिखाई दिया'

प्रश्नकर्ता : दोष दिखाई देना यानी एक्ज़ेक्ट पिक्चर सामने आनी चाहिए न! पिक्चर नहीं आती। जिस वक्त दोष हुआ था यदि उस वक्त की पूरी सिच्युएशन दिखाई दे न...

दादाश्री : क्या हुआ अगर दिखाई नहीं दिया तो ?

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तो पता चला कि ऐसा-ऐसा हुआ था।

दादाश्री : तुम्हें पता कैसे चला ? देखे बगैर पता कैसे चला ?

प्रश्नकर्ता : वह तो ऐसा जाना कि उस वक्त ऐसे संयोग थे। दिखाई नहीं देता।

दादाश्री : जाना यानी दिखाई दिया न? दिखाई देने को तुम अपनी भाषा में क्या समझते हो? 'नहीं समझे? तू पहले से ही ऐसा कहता है न इसलिए कुछ भी दिखाई नहीं देता और अगर कुछ दिखाई दे, तो वह भी हल्का दिखाई देगा। तू अलग तरह से देखने का ढूँढ रहा है। (तेरा देखने का तरीका अलग है) ऐसा किसी को भी नहीं होता न? और कैसे दिखाई दिया? इतना जो भी दिखाई दिया, जाना, वह कैसे जाना? जाननेवाला होना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : जाननेवाला तो है। दादाजी कहते हैं न कि जाननेवाला तो है।

दादाश्री : इसलिए जाना।

'फिल्म' शब्द तो सिर्फ समझने के लिए

प्रश्नकर्ता : जानना स्मृति का हिस्सा होगा न? जो हमें दिखाई देता है, वह स्मृति में से वापस आता होगा न?

दादाश्री : स्मृति नहीं, स्मृति से लेना-देना नहीं है। इतनी स्मृति तो हो ही नहीं सकती।

प्रश्नकर्ता : तो फिल्म कहाँ पर है?

दादाश्री : फिल्म की ज़रूरत नहीं है। वह तो दिखाई देता है। फिल्म शब्द तो हम सिर्फ कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : कौन से भंडार में से निकलता है? स्टोर हाउस कौन सा है कि जहाँ यह पिक्चर के तौर पर रहती है?

दादाश्री : पिक्चर के तौर पर नहीं है। जो घटनाएँ हो चुकी हैं, उन्हें आत्मा देख सकता है कि ये अड़तीसवें साल में हुई थी, ये छत्तीसवें साल में हुई थी, पैंतीसवें साल में हुई थी। उन्हें 'देख' सकता है और 'जान' सकता है।

नासमझी से उलझन

प्रश्नकर्ता : दोनों अलग चीज़ें हैं, ठीक है? वे दोनों क्रियाएँ अलग हैं न? 'देख' सकता है और 'जान' सकता है, ये दोनों क्रियाएँ अलग हुई न?

दादाश्री : अलग होती होगी कहीं?

प्रश्नकर्ता : देखता है और जानता है।

दादाश्री : एकदम से भीड़ आ जाए और देखें तब पता लगाने नहीं जाते कि यह कौन है और वह कौन है, इसलिए उसे 'देखना' कहते हैं। और इसमें तो पता लगाते हैं कि 'ओहो, ये तो लल्लूभाई आए हैं', उसे 'जानना' कहते हैं। तुम्हें ऐसा नहीं दिखाई देता? पहचानते नहीं? अंदर जो आ रहे थे, उन्हें?

प्रश्नकर्ता : हाँ दादा, उसे जानना कहते हैं। देखा-जाना, आत्मा ज्ञाता-दृष्टा बना।

चलो खुद के सिद्धांत के अनुसार

प्रश्नकर्ता : सामायिक में बैठना अच्छा नहीं लगता। टालने का मन करता है। वह क्या है?

दादाश्री : मन भले ही शोर मचाए लेकिन तुझे क्या-लेना? तेरे सिद्धांत के विरुद्ध चलता है? अगर चलता है तो अभी भी वर्चस्व उसी का है। वह मना करे तो हमें क्या? वह तो सामायिक करने ही नहीं देगा।

प्रश्नकर्ता : सामायिक करने की इच्छा इतनी स्ट्रॉंग नहीं है।

दादाश्री : ओहो! तब तो यह सारा धर्म करने की इच्छा ही नहीं है। उसमें फिर स्ट्रॉंग भी नहीं है।

सामायिक अर्थात् अड़तालिस मिनट की चीज़ है। अड़तालिस मिनट भी एक जगह पर नहीं बैठ सकता, तो ब्रह्मचर्य पालन कैसे कर सकेगा? उसके

बजाय चुपचाप शादी कर ले तो अच्छा है। जबकि तुम लोग तो बैल की इच्छानुसार गाड़ी चलाते हो (मन का चलता चलते हो)। 'वह इस ओर जा रहा है तो मैं क्या करूँ?' कहते हैं! उससे अच्छा तो शादी कर लो न शांति से! गाड़ी इस ओर जा रही हो तो मतलब ही नहीं है न! निश्चयबल नहीं है। खुद का कुछ भी नहीं है। खुद की कोई काबिलियत नहीं है। तुझे क्या लगता है? गाड़ी जाने देनी चाहिए?

प्रश्नकर्ता : नहीं जाने देनी चाहिए।

दादाश्री : तो ये गाड़ियाँ क्यों जा रही हैं?

समझकर काम लो, मन के फेज़ से

प्रश्नकर्ता : आप बताते हैं न तब पता चलता है कि यह मन के कहे अनुसार किया था, वर्ना पता ही नहीं चलता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन पता चलने के बाद समझ जाता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : समझ जाता है।

दादाश्री : अब फिर परसों आप ऐसा कहोगे कि, 'मुझे भीतर से ऐसा लगा, इसलिए उठ गया सामायिक करते करते!'

प्रश्नकर्ता : सामायिक करने बैठते हैं तो मज़ा नहीं आता।

दादाश्री : मज़ा नहीं आए तो उसमें हर्ज नहीं है। लेकिन मन के कहे अनुसार करे, तो नहीं चला सकते।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मज़ा नहीं आता, इसलिए ऐसा लगता है कि अब नहीं बैठना है।

दादाश्री : लेकिन यों 'मन के कहे अनुसार चलना है' ऐसी इच्छा नहीं है न तेरी?

प्रश्नकर्ता : ऐसा तो अब पता चला न!

दादाश्री : मज़ा नहीं आता, वह अलग बात है। मज़ा तो, हम समझते हैं कि इसका इन्टरेस्ट (रुचि) कहीं और है, इसमें इन्टरेस्ट कम है। इन्टरेस्ट तो हम ला देंगे।

प्रश्नकर्ता : मज़ा नहीं आता इसलिए मन बताता है कि 'अब चले जाना है।'

दादाश्री : मैं मन की वह बात नहीं कर रहा हूँ। मज़े का और मन का कोई लेना-देना नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मज़ा नहीं आए तब फिर ऐसा लगता है कि सामायिक में नहीं बैठना है।

दादाश्री : मज़ा क्यों नहीं आता, वह मैं जानता हूँ।

टूटते हैं आवरण निश्चयबल से

प्रश्नकर्ता : मुझे सामायिक में कुछ भी नहीं दिखाई देता।

दादाश्री : कैसे दिखेगा लेकिन, जब ये सारी गड़बड़ करता है तो।

प्रश्नकर्ता : खुद को पता चले कि ये सब गड़बड़ की हैं तो उसके बाद दिखेगा न?

दादाश्री : नहीं, लेकिन पहली बात तो खुद की समझ वहाँ तक पहुँची ही नहीं है। तो जब तक उसे समझ में नहीं आएगा, तब तक दिखेगा कैसे? ये क्या कहना चाह रहे हैं, वह बात ही समझ में नहीं आई है न? उसमें फिर उदाहरण भी दे रहा हूँ, बैल गाड़ी का उदाहरण दे रहा हूँ, मिकेनिकल का उदाहरण दे रहा हूँ लेकिन एक भी समझ अंदर तक नहीं पहुँच रही है। उसका अब क्या करें?

प्रश्नकर्ता : फिल्म की तरह दिखना चाहिए न?

दादावाणी

दादाश्री : कैसे देखेगा लेकिन? तुम देखनेवाले नहीं हो तो? गाड़ी के मालिक नहीं हो न? मालिक बनोगे तो दिखेगा। अभी तो तुम बैल के कहे अनुसार चल रहे हो। जो इस बैल के कहे अनुसार चलेगा, उसे कोई फिल्म नहीं दिखेगी। जो 'खुद' के निश्चय से चलता है उसे सबकुछ दिखता है। क्या इन सभी को फिल्म नहीं दिखती? तुझे नहीं दिखती है न!

प्रश्नकर्ता : सामायिक करने में इन्टरेस्ट नहीं है इसलिए ऐसा होता है न?

दादाश्री : इन्टरेस्ट नहीं हो तो वह चला सकते हैं। इसे नहीं चला सकते। इसके जैसी मूर्खता कोई करता होगा? तो फिर क्या सोचकर करता होगा?

प्रश्नकर्ता : अभी भी पता नहीं चल रहा कि 'ऐसा मैं करता हूँ' समझ में नहीं आता।

दादाश्री : समझ में ही नहीं आ रहा है न? कब समझ में आएगा? दो-तीन जन्मों के बाद समझ में आएगा? शादी कर लेगा तो वह समझा देगी। 'समझ में नहीं आ रहा है' कहता है!

ये बैल गाड़ी का उदाहरण दिया फिर निश्चयबल की बात की। जो अपनी धारणा के अनुसार नहीं करने दे, उसकी बात माननी चाहिए क्या? माँ-बाप की नहीं सुनते और मन की ज़्यादा कीमत मानी है, ऐसा?

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे सामायिक में कुछ दिखता ही नहीं।

दादाश्री : क्या देखना है, जो दिखाई दे?

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं न कि चार साल की उम्र तक का दिखाई देता है सबकुछ।

दादाश्री : वह ऐसे नहीं दिखता। वह तो

गहराई में जाने का कहें, तब दिखाई देता है। जो मन के कहे अनुसार चले वह पागल ही है न? फिर दिखेगा ही कैसे? 'देखनेवाला' जुदा होना चाहिए, खुद के निश्चयबलवाला! अभी तक मन का कहा हुआ ही किया है। उसी वजह से यह सारा आवरण आ गया है।

प्रश्नकर्ता : सामायिक कर रहे हों और उस समय मन सामायिक करने के लिए मना करे तो क्या वहाँ उदयकर्म है?

दादाश्री : उदयकर्म कब कहलाता है? निश्चय होने पर भी निश्चय को टिकने न दे, तब उदयकर्म कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : विचार उदयकर्म के अधीन तो नहीं फूटते हैं न?

दादाश्री : लेकिन अपना निश्चय हो तो सामायिक करना। अगर निश्चय हो तो भीतर प्रकृति को अनुकूल नहीं आए, फिर भी करना चाहिए।

वर्ना विचार उदयकर्म के अधीन आते हैं। उन्हें हमें देखना है। वह अपने पुरुषार्थ की बात है। विचारों को देखने से अपना उदयकर्म वहीं पर पूरा हो जाता है। देखा मतलब खत्म! उसमें परिणमित हो जाएँ तो उदयकर्म शुरू हो जाता है!

ठपका सामायिक, सामायिक का एक प्रकार

एक भाई ने आकर मुझ से कहा, 'मुझ से ऐसा गलत काम हो गया है कि जिसे भूल ही नहीं पा रहा।' अब ज्ञान लिया हुआ व्यक्ति, भूल नहीं पाता और अंदर कचोटता रहता है! यह कैसा? मैंने ज्ञान दिया है, फिर भी तुझे ऐसा सब होता है। तब कहने लगा, 'मुझे ऐसा होता है। वास्तव में जो होता है, वह कह रहा हूँ।' मैंने कहा, 'छत पर जाकर तेरी फाइल नंबर वन से कहना।' तब कहता है 'क्या कहूँ?' 'अरे, तुम नालायक हो, बदमाश हो, लुच्चे

हो, चोर हो। अच्छी तरह *ठपका* (उलाहना, डाँटना) देना, आधा घंटा, जिसने गुनाह किया है उसे डाँटना। तू डाँट, यदि ठीक नहीं होता तो मेरी जिम्मेदारी।' ठीक हो गया! एक ही बार में ठीक हो गया।

'सुधरे नहीं तो डाँटना,' ऐसा उसे कहा था इसलिए फिर उसने तो छत पर जाकर क्या किया? जिस तरह किसी अन्य व्यक्ति को धमकाते हैं उतना धमकाया, बल्कि उससे भी ज्यादा धमकाया। तब फाइल (नं-१) रो रही थी और वह देख रहा था। बहुत रोया, जोर-जोर से रोया और वह उसे देखता रहा। फिर नीचे आने-जानेवाले लोग कहने लगे, 'अरे, कौन लड़ाई-झगड़ा कर रहा है?! अरे, कौन इसे डाँट रहा है?' फिर सीधा हो गया!

जुदापन के अनुभव के लिए प्रयोग

प्रश्नकर्ता : अब *ठपका* देता हूँ। गलती करने के बाद में भी और करने से पहले भी पता चल जाता है। तब ऐसा लगता है कि 'चंदूभाई को यह चीज़ शोभा नहीं देती।' लेकिन हो जाता है।

दादाश्री : हो जाता है, वह तो दूसरी परत है। ऐसी तो हजारों परते आँगी और किसी-किसी में दो ही परतें होती हैं, लेकिन आपको *ठपका* देना है। आप *ठपका* दोगे तो आप अलग और वह अलग। उसका अनुभव हुआ आपको। और हमें *ठपका* देना ही चाहिए। वे परतें तो आती ही रहेंगी। होंगी तो आँगी न! और नहीं होगी तो कैसे आँगी? यानी जितना गाढ़ कर्म, परतें उतनी अधिक। इसलिए *ठपका* देना कि, 'ऐसा क्यों करते हों?' हम शुद्धात्मा हैं, चंदूभाई से कहना, 'इतना क्या आपका रौब है कि इतना गुस्सा हो रहे हो?' बल्कि आप चंदूभाई को डाँटना। हम शुद्धात्मा हैं, हमें क्या लेना-देना?

उस भाई ने डाँटा था और रो रहा था बेचारा।

फिर भी वह क्या कह रहा था? 'अब तो तू रोएगा तो भी मैं तुझ से कन्विन्स नहीं होऊँगा। मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।' उसके बाद उसके दोष चले गए। इतना धमकाया कि रोना निकल गया। यों दो शब्द तो कहने पड़ेंगे।

प्रश्नकर्ता : खुद के ध्यान नहीं देने से ऐसा ही चलता है फिर।

दादाश्री : ध्यान नहीं, आप मन का चलने देते हो इसीलिए वह उल्टा चलता रहता है। इसलिए अन्य किसी के डाँटने से नहीं चलेगा, तुझे ही तेरी फाइल नंबर वन को डाँटना पड़ेगा। यह मार्ग डाँटने का तो है ही नहीं न, हम ऐसे डाँटते ही नहीं न हैं! हम कहा डाँटे? और किसे डाँटेंगे हम? आप तो शुद्धात्मा हो, हम से तो आपको डाँटा नहीं जाएगा। इसलिए आपको चंदूभाई को डाँटना पड़ेगा, ताकि हमें डाँटना नहीं पड़े।

डाँटना है, लेकिन आज्ञा लेकर

प्रश्नकर्ता : डाँटने का मन क्यों नहीं होता होगा? अगर दूसरा कोई भूल करे तो उसे तो अच्छी तरह से डाँट देता है।

दादाश्री : ऐसा जानता ही नहीं न, जानेगा तो डाँटेगा। दूसरे को जैसा करते हुए देखता है वैसा करता है। वह भाई तो जो आँखे निकाल-निकालकर कह रहा था! वह रो पड़ा। धमकानेवाला खुद ही और खुद ही रो पड़ा, बल्कि आत्मा जुदा हो गया। धमकाने से आत्मा जुदा हो गया।

प्रश्नकर्ता : यह डाँटने का प्रयोग बहुत सुंदर है।

दादाश्री : लेकिन बहुत नहीं डाँटना चाहिए। हमें पूछकर डाँटना चाहिए। सभी लोगों को डाँटने की ज़रूरत नहीं पड़ती, इस जैसे को ज़रूर पड़ती है। इसकी इच्छा दृढ़ है न! इसीलिए सभी चीजों के

दादावाणी

आर-पार निकल सकता है। ये सभी निकल जाएँगे, रास्ता मिल जाएगा।

डाँटनेवाला डाँटता रहता है और रोनेवाला रोता रहता है। बहुत बड़ा आश्चर्य है न! फिर मैंने दूसरे लोगों से कह रखा है कि 'ऐसे मत डाँटना। मुझे पूछे बिना कोई भी मत डाँटना। जब हम आज्ञा दें तभी ऐसा करना।' क्योंकि जोखिम है यह तो। ये पैंसठ साल के व्यक्ति वकील, धमकाने से ये क्या-क्या दावा कर दें, कहा नहीं जा सकता न?

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी वे भाई आए थे न, वे कह रहे थे कि 'फाइल नंबर वन इतनी अधिक भयभीत हो गई है कि अब गलत करती ही नहीं है।'

दादाश्री : हाँ, वह डर ही जाएगी न! उसे धमकानेवाला कोई मिला ही नहीं था न और अगर कोई धमकाए तो उस पर दावा करता है, क्लेम करता है। ज्ञानीपुरुष यदि ज़बरदस्त धमकाए न, तो खुद का हित छोड़कर यहाँ से चला भी जाए। इसलिए आप खुद ही धमकाओ, तो कहाँ जाएगा वह?

तब समझ लेना आत्मा की ओर मुड़े

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा कुछ करना हो तो पहले आपके पास आकर आज्ञा लेकर करें तो ठीक से उसका फायदा, लाभ मिलेगा न?

दादाश्री : आर्शीवाद देते हैं न, फिर आपको क्या? क्योंकि जब मैं आर्शीवाद देता हूँ न, तब सिर्फ आत्मा ही होता है। इसलिए सिर्फ प्रज्ञाशक्ति ही काम करती है। वर्ना अंदर और कुछ हो न, तो मुसीबत खड़ी हो जाए।

डाँटने से विरोधपक्षवाले अलग हो जाते हैं। विरोधपक्ष के साथ बैठना है और सरकार को बदनाम करना है। विरोधपक्ष के साथ बैठे, वह पूर्वकर्म के कारण है। लेकिन विरोधपक्ष के अभिप्राय में रहना

या नहीं रहना, वह आज का पुरुषार्थ है। अतः आपको सरकार का (आत्मा को) ही साथ देना चाहिए। विरोधपक्ष में बैठकर भी सरकार को मत दे, तब जानना कि अब आत्मा की तरफ मुड़ा। आत्मपक्ष में रहो।

कहनेवाला कौन है? किसे कह रहा है? उसे जो जानता है, वह शुद्धात्मा संपूर्ण है। कहता कौन है? वह प्रज्ञा समिति। किसे कहता है? अज्ञा समिति को। अज्ञा समिति में अहंकार, क्रोध-मान-माया-लोभ। वह समिति अलग है। यह समिति अलग है। यदि एक घंटे तक इस तरह चंदूभाई को *ठपका* देगा, तो बोलो, उसकी शक्ति कितनी बढ़ जाएगी!

उपयोग में रहने का तरीका

नीरू बहन हों तो भी मैं तो कहता हूँ। मैं क्या कहता हूँ? 'अंबालाल भाई आप कैसे क्रॉन्ट्रैक्टर हो, कैसे इंसान हो? अपने आप को क्या समझकर रखा है?' ऐसा कहता हूँ। नीरू बहन कहती हैं, 'आप बातें कर रहे हो?' तब मैं कहता हूँ, 'तो और क्या करूँ? सारी बातें छिपकर थोड़ी न हो सकती हैं।'

प्रश्नकर्ता : दादा, आप तो निर्भेदी हो न यानी बिना भेदवाले, इसलिए आप अलग रहकर बोल सकते हो।

दादाश्री : अलग ही है। अलग है ही। मैंने अलग ही कर दिया है। बिल्कुल अलग कर दिया है। अब अगर आप उसका उपयोग नहीं करते हो.... आप उसके (फाइल नं-१ के) साथ बैठे रहो एक होकर। डाँटने से अपने आप ही अलग हो जाएगा। जैसे सास-बहू लड़ती हैं, वैसे। सास-बहू तो लड़ेंगे ही न? नहीं, लेकिन बेचारी बहू को सास के कितने दोष दिखते हैं? यह तो खुद से लड़ता है, इसलिए सारे दोष देख पाता है!

अब रोज़ आपको ऐसा *ठपका* नहीं देना है कि

रोने लगे, लेकिन यों ही रोज़ कहते रहना है। सास के किच-किच शुरू करते ही बहू समझ जाती है कि इनके साथ मेरा मेल नहीं बैठेगा।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : वह जुदा होने का, और भी ज़्यादा जुदा होने का रास्ता है।

जुदा रहकर डाँटो ज़रा

दादाश्री : हाल में तुम्हारा किस तरफ का चल रहा है ?

प्रश्नकर्ता : इस तरफ, रियल में पुरुषार्थ, अब इस तरफ शुद्धात्मा की तरफ चल रहा है।

दादाश्री : कैसे करते हो ?

प्रश्नकर्ता : चंदू को डाँटकर।

दादाश्री : तुम्हारे डाँटने पर चंदू रूठ नहीं जाता ?

प्रश्नकर्ता : रूठता नहीं है लेकिन डाँटना जल्दी से याद नहीं आता। बाद में जब याद आता है तब डाँट देता हूँ। फिर मान भी जाता है कि 'हाँ बात तो सही है।'

दादाश्री : इतना वह मान जाता है ?

प्रश्नकर्ता : वह माने या न माने, लेकिन डाँटना यानी डाँटना, फिर धीरे-धीरे मानना सीख लेगा।

दादाश्री : ठीक है।

मगन, तूने क्या किया ?

प्रश्नकर्ता : लेकिन में बहुत धीरे-धीरे बोल रहा था।

दादाश्री : तू किसलिए फास्ट बोलेगा, तू तो दयालु इंसान है न ?

सोते समय (जब तू सामायिक करता है तब) तुझे ऐसा कहना चाहिए कि, 'मगन क्या सोचकर ढीला-ढाला बैठा है, शर्म नहीं आती?' पाँच-दस मिनट यों कहने में तुझे कोई परेशानी है ?

प्रश्नकर्ता : कोई परेशानी नहीं है।

दादाश्री : तो कहना न। डाँटने से आपका क्या नुकसान है। देखो न, वह भाई एक दिन इस तरह डाँट रहा था कि छत भी हिलने लगी थी न ? अच्छा उपाय था न ?

प्रश्नकर्ता : बहुत अच्छा उपाय था दादा।

दादाश्री : लेकिन फिर से नहीं करते हो और भूल जाते हो। ऐसे कमज़ोर लोग हो।

प्रश्नकर्ता : आपने मना किया था कि 'मेरी आज्ञा के बिना नहीं करना है।'

दादाश्री : रोज़ मत करना। वर्ना बेशर्म हो जाएगा।

यदि सिर पर लें तो पीड़ा

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन दादा सामायिक करने का ऐसा (मन) नहीं होता। कुछ करीए दादाजी।

दादाश्री : करने का भाव तो है न ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। पहले इतना माल फूटता था कि यदि सामायिक न करें तो नहीं चलता था। और अब माल कम हो गया न, इसलिए पहले की तरह सामायिक में बैठने का मन नहीं करता। फिर मन सामायिक में से बीच में से उठा देता है।

दादाश्री : हाँ। बल्कि आपको कहना चाहिए कि 'मगन, सीधी तरह से बैठे रहना। यदि आज उठाएगा तो तेरी हालत, तेरी बात तू जाने' कहना है।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : आज ठीक से तय करके बैठा था कि 'आज ठीक से बैठना शांति से, एलर्ट रहकर बैठना।'

दादाश्री : 'तेरी बात तू जाने। तेरी शामत आएगी।' ऐसा कहेंगे तो आपको कुछ भी नहीं और गाड़ी चलेगी। सिर पर ले लेते हो। इस बार तय ही करना है कि आज इधर-उधर नहीं जाना है। आज ऐसा करना है, तो हो गया मगन।

प्रश्नकर्ता : हाँ। बस। 'ऐसा नहीं करना है, ऐसा करना है' उसे सिर पर लेना कहते हैं?

दादाश्री : बेमतलब की पीड़ा। मैंने शुद्ध आत्मा दिया है। यदि उसमें रहो तो शांति हो जाएगी।

अरीसा सामायिक से जुदापन की जागृति

प्रश्नकर्ता : (इस फाइल नं-१ को डाँटना है वह) हर एक को खुद की फाइल देखकर करना चाहिए। हर एक की फाइल को अलग-अलग दवाई माफिक आती है। एक सी दवाई माफिक नहीं आती। मेरी फाइल को डाँटनेवाली सख्त दवाई माफिक नहीं आती।

दादाश्री : हाँ, किसी का प्रेशर बढ़ जाता है, किसी को ऐसा कुछ हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो ये सब एक दूसरे का देख-देखकर करने जाते हैं।

दादाश्री : नहीं! देख-देखकर मत करना। 'मुझ से पूछना' ऐसा मैंने कहा है। "अरे, कोई मत करना। 'गेट आउट-गेट आउट,' कहोगे तो ब्लड प्रेशर बढ़ जाएगा।" इसलिए तुम्हें तो आईना (अरीसा) में देखकर कहना है कि 'भाई, मैं हूँ तेरे साथ। तू घबराना मत', कहना। उससे प्रेशर नहीं बढ़ेगा। निश्चय चाहिए इसमें, निश्चय।

आईने में चंदूभाई सामने दिखते हैं। उसमें एक आत्मा है और सामने जो खड़े हैं, वे चंदूभाई हैं। हम ने उसे कहा है कि, 'चंदूभाई, ऐसी-ऐसी भूलें कब तक करोगे?' 'ज़रा आपको डाँट लगाने जैसा है' ऐसा भी कहना है।

आप किसी दिन आईने में देखकर चंदूभाई को डाँटते हो? हम आईने में चंदूभाई को सामने बिठाकर कहते हैं कि, 'आपने पुस्तकें छपवाई, ज्ञान दान किया, वह तो बहुत अच्छा काम किया है, लेकिन बाकी सब आप ऐसा करते हो, वैसा करते हो, तो क्यों करते हो?' ऐसा अपने आप से कहना पड़ेगा या नहीं? क्या सिर्फ दादा ही बार-बार कहते रहें? उसके बजाय आप भी कहो तो वे मानेंगे, आपका ज़्यादा मानेंगे! मैं कहता हूँ तब आपके मन में क्या होता है? मेरे पड़ोस में जो हैं 'वे' मुझे नहीं कहते और दादा मुझे क्यों कह रहे हैं। इसलिए हमें खुद ही डाँटना चाहिए।

औरों की सभी भूलें निकालना आता है और खुद की एक भी भूल निकालनी नहीं आती। और आपको तो भूलें नहीं निकालनी हैं, 'आपको' तो चंदूभाई को ज़रा सा डाँटना ही है। 'आप' तो अपनी सारी भूलें जान गए हो। इसलिए अब 'आपको' चंदूभाई को डाँटना है, वे नरम तो हैं लेकिन 'मानी' भी उतने ही हैं, सब तरह से 'मानवाले' हैं। इसलिए उन्हें ज़रा पटाने से सब काम हो जाएगा।

अब यह डाँटने का अभ्यास हम कब कर सकते हैं? हम घर पर एक-दो लोग डाँटनेवाले रख लें, लेकिन वे सचमुच में डाँटनेवाले नहीं होते न! सचमुच में डाँटनेवाला हो तो ही परिणाम आता है। नहीं तो झूठा, बनावटी डाँटनेवाला हो तो परिणाम नहीं आता। हमें कोई डाँटनेवाला हो तो हमें उसका लाभ लेना चाहिए न? ऐसी सेटिंग करना तो आता नहीं है न?

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : डाँटनेवाला हो तो हमें अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : वे पसंद नहीं हैं, लेकिन रोज़ के डाँटनेवाले मिल जाएँ तो फिर हमें निकाल करना आना चाहिए न कि “यह तो रोज़ का रोना है, तो कहाँ ठिकाना पड़ेगा? उसके बजाय हम अपनी ‘गुफा में’ घुस जाएँ।”

अब आपको क्या करना है कि आपको चंदूभाई के साथ, चंदूभाई को बिठाकर बातचीत करनी पड़ेगी कि, ‘आप सड़सठ साल की उम्र में भी रोज़ सत्संग में आते हो, इस बात का बहुत ख्याल रखते हो, यह बहुत अच्छा काम करते हो।’ लेकिन साथ ही साथ दूसरी समझ भी देनी है और सलाह देनी है कि, ‘देह का ज़्यादा ध्यान (खयाल) क्यों रखते हो? देह में ये जो कुछ हो रहा है, वह भले ही हो। आप हमारे साथ इस तरफ टेबल पर आ जाओ न! हमारे पास अनंत सुख है,’ आपको चंदूभाई से ऐसा कहना है। अगर चंदूभाई को आईने के सामने बिठाया हो, तो वह आपको ‘एक्ज़ेक्ट’ (अलग) दिखेंगे या नहीं दिखेंगे?

प्रश्नकर्ता : अंदर तो मेरी घंटों बातचीत चलती है।

दादाश्री : लेकिन, अंदर बातचीत करने में दूसरे फोन उठा लेते हैं, इसलिए उन्हें सामने बिठाकर ज़ोर-से बातचीत करनी है, तो कोई दूसरा फोन उठाएगा ही नहीं न।

प्रश्नकर्ता : खुद को सामने कैसे बिठाना है?

दादाश्री : तुम ‘चंदूभाई’ को सामने बिठाकर डाँटते रहो तो ‘चंदूभाई’ बहुत समझदार हो जाएँगे! तुम्हें खुद ही डाँटना है कि ‘चंदूभाई, ऐसा कहीं होता है? ये आपने क्या लगा रखा है? और अब सीधे हो जाओ न?’ हम ऐसा कहें तो

उसमें क्या गलत है? कोई दूसरा डाँट तो अच्छा लगेगा क्या? इसलिए हम आपसे ‘चंदूभाई’ को डाँटने के लिए कहते हैं, वर्ना तो एकदम ही अंधेर चलता रहेगा।

तुझे ‘चंदूभाई’ को आईने के सामने बिठाकर ऐसे प्रयोग करना है। आईने में तो चेहरा वगैरह दिखता है। फिर ‘चंदूभाई’ से कहना, ‘तूने ऐसा क्यों किया? तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। पत्नी के साथ मतभेद क्यों करते हो? वर्ना फिर शादी क्यों की? शादी करने के बाद ऐसा क्यों कर रहे हो?’ ऐसा सब कहना पड़ेगा। ऐसे आईने में देखकर एक-एक घंटा उलाहना दोगे, तो बहुत शक्ति बढ़ जाएगी। यह बहुत बड़ी सामायिक कहलाती है। तुझे चंदूभाई की सभी भूलों का पता चलता है न? जितनी भूलें दिखाई दें, वे एक घंटे तक आप चंदूभाई को आईने के सामने बिठाकर कह दो, तो वह सब से बड़ी सामायिक है!

प्रश्नकर्ता : हम अगर आईने में नहीं करें और ऐसा मन के साथ अकेले अकेले यों बातें करें, तो वह नहीं हो सकता?

दादाश्री : नहीं, वह नहीं हो पाएगा। वह तो आईने में तुम्हें चंदूभाई दिखाई देने चाहिए। अकेले-अकेले मन में करना नहीं आएगा, अकेले-अकेले करना तो ‘ज्ञानीपुरुष’ का काम है लेकिन आपको तो ऐसा यह बाल भाषावाला सिखाना पड़ेगा न? और यह आईना है, वह तो अच्छा है, वर्ना (पहले तो) लाख रूपये का आईना खरीदकर लाना पड़ता। ये तो (आजकल) सस्ते आईने हैं! ऋषभदेव भगवान के समय में सिर्फ भरत चक्रवर्ती ने ही अरीसा (आईना) भवन बनवाया था! और अभी तो सभी जगह बड़े-बड़े आईने दिखाई देते हैं!

यह सारी सब परमाणु की थ्योरी है। लेकिन यदि आईने के सामने बिठाकर करते हैं तो बहुत काम

बन सकता है। लेकिन कोई करता नहीं है न? जब हम कहते हैं तब एक-दो बार करते हैं और फिर वापस भूल जाते हैं!

भरत राजा को ऋषभदेव भगवान ने 'अक्रम ज्ञान' दिया और अंत में उन्होंने अरीसा भवन का सहारा लिया, तब उनका काम हुआ! अरीसा भवन में उनकी ऊंगली से अँगूठी निकल गई थी, इसलिए जब ऊंगली अजीब दिखी, तब उन्हें लगा कि 'सब ऊंगलियाँ ऐसी दिख रही हैं लेकिन यह ऊंगली क्यों ऐसी दिख रही है?' तब पता चला कि अँगूठी निकल गई है इसीलिए। अँगूठी के कारण ऊंगली कितनी सुंदर दिख रही थी। फिर अंदर तूफान शुरू हो गया। जो ठेठ 'केवल' होने तक चला! विचारणा करने लगे कि 'अँगूठी के आधार पर ऊंगली अच्छी दिख रही थी? मेरे कारण नहीं?' तो लगा कि 'तेरे कारण कैसा?' तब फिर 'नहीं है मेरा, नहीं है मेरा, नहीं है मेरा' ऐसा करते-करते 'केवलज्ञान' प्राप्त किया! यानी हमें अरीसा भवन का लाभ लेना है। अपना 'अक्रम विज्ञान' है। जो कोई इसका लाभ लेगा वह काम निकाल लेगा। लेकिन इसका किसी को पता ही नहीं चलता है न! भले ही आत्मा नहीं जानता हो, फिर भी अरीसा भवन की सामायिक बहुत अच्छी हो सकती है।

जुदापन की सामायिक

आज 'अलग' रखने की सामायिक बताते हैं। चंदूभाई और शुद्धात्मा को अलग रखने की, यह सब से उच्च तरीका है। उस सामायिक में आपको इस तरह बोलते रहना है।

१. 'हे शुद्धात्मा भगवान! आप अलग है और चंदूभाई अलग हैं।'

२. 'हे शुद्धात्मा भगवान! आप रियल हो और चंदूभाई रिलेटिव हैं।'

३. 'हे शुद्धात्मा भगवान! आप परमानेंट हो और चंदूभाई टेम्पेरी हैं।'

ऐसा अड़तालीस मिनट तक बोलते रहना है।

'मैं' और 'चंदूभाई' दोनों अलग ही हैं, ऐसा मुझे अलग रहने की शक्ति दीजिए। मुझे आपकी तरह जुदा रहने की शक्ति दीजिए और चंदूभाई जुदा रहें। हे दादा भगवान! आपकी कृपा बरसे। चंदूभाई क्या कर रहे हैं? उसे मैं देखूँ और जानूँ, वही मेरा काम।

उसमें आपको जो शक्तियाँ कम पड़ती हों तो वे सामायिक में शुद्धात्मा भगवान से माँग सकते हैं। इससे बिल्कुल जुदा ही हो जाएँगे। दिन में जब भी याद आए तब पाँच-पच्चीस बार ये तीन वाक्य बोलेंगे, तो भी तुरंत भीतर सब अलग हो जाएगा और क्लियर (स्वच्छ) हो जाएगा सब।

प्रयत्नों से अंत में होगा प्रयोग सिद्ध

प्रश्नकर्ता : आप ये सारे जो प्रयोग बताते हैं न, आइने में सामायिक करना। फिर प्रकृति के साथ बातचीत करना वगैरह प्रयोग बहुत अच्छे लगते हैं। फिर दो-तीन दिन अच्छे से होता है, उसके बाद उसमें कमी आ जाती है।

दादाश्री : कमी आ जाए तो फिर वापस नए सिरे से करना है। पुराना हो जाए तो कमी आ ही जाती है। पुद्गल का स्वभाव है कि पुराना हो जाए तो बिगड़ता जाता है। फिर वापस नई सेटिंग करके रख देनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् उस प्रयोग द्वारा ही कार्य सिद्ध हो जाना चाहिए, ऐसा नहीं होता और बीच में ही बंद हो जाता है प्रयोग।

दादाश्री : ऐसा करते-करते सिद्ध होगा, एकदम से नहीं होगा।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : वह प्रयोग अधूरा हो और फिर दूसरा प्रयोग करते हैं। वह अधूरा छोड़ देते हैं, कोई तीसरा प्रयोग बताया, वह भी अधूरा! मतलब सभी अधूरे रहते हैं।

दादाश्री : वह हमें वापस पूरा कर लेना, धीरे-धीरे एक-एक को लेकर। आईने का प्रयोग पूरा नहीं किया ?

प्रश्नकर्ता : नहीं! जब भी करते हैं, उतना लाभ होता है, लेकिन उसके बाद जुदापन रहना ही चाहिए। इन भाई को जैसा अलग देखता हूँ, वैसा परमानेन्ट फिर नहीं देख पाता। प्रकृति को जानते ज़रूर हैं कि अलग है।

दादाश्री : कितना डाँटा था उसने। रोना आ गया तब तक डाँटा था। तो बोलो, अब कितना अलग हो गया ?! तूने डाँटा है, ऐसा कभी ? रोने लगे, ऐसा ?

प्रश्नकर्ता : रोया नहीं था, लेकिन ढीला पड़ गया था।

दादाश्री : ढीला पड़ गया था। तू डाँटता है तो सीधा हो जाता है क्या! तो फिर वह प्रयोग कितना कीमती प्रयोग है। लोगों को आता नहीं है। देखो न, यह भाई बैठा रहता है घर पर, लेकिन ऐसा प्रयोग नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : हम भी बैठे रहते हैं। तो इसमें हमारी कमी है या फिर प्रयोग का महत्त्व नहीं समझे हैं। इसमें हकीकत क्या है ?

दादाश्री : उतना उल्लास कम है।

निजस्वरूप की जागृति वह शुद्ध सामायिक

हमें तो निजस्वरूप की जागृति में रहना है। ज्ञाता-दृष्टा परमानंद में रहना है। वही अपनी शुद्ध सामायिक है।

तुम्हें शुद्धात्मा का उपयोग कितनी देर के लिए रहता है ? गुंठाणुं (४८ मिनट) ? एक घंटे के लिए तो रहना चाहिए गुंठाणुं ?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कन्टिन्युअस नहीं रहता, टुकड़े-टुकड़े रहता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन कन्टिन्युअस करने में परेशानी क्या है ? एक गुंठाणां तक करे तो भी बहुत हो गया। तो भी बड़ी सामायिक, पुणिया श्रावक की सामायिक कहलाएगी। ज्यादा नहीं तो घंटे भर के लिए तो रहना चाहिए न ? ज्ञानीपुरुष को पूरे दिन के लिए रहता है। पंद्रह मिनट या दस मिनट के लिए थोड़ी देर शायद चला भी जाए, लेकिन चौबीसों घंटे रहता है। चूकते ही नहीं न, अपनी लाइन से (ध्येय से) चूकते नहीं। कभी न कभी तो ऐसा बनना पड़ेगा न ? कभी न कभी तो उस गाँव जाना ही पड़ेगा न ? अंतिम स्टेशन तो वही है न ? सेन्ट्रल स्टेशन जाना पड़ेगा न ? बीच के स्टेशन पर उतरने से क्या मतलब ?

रखना है लक्ष्य पूर्णता की जागृति का

प्रश्नकर्ता : दादाजी आप वह उदाहरण देते हैं न कि यदि गाड़ी की लाइट बंद करके चलाएँ, तो लगता है सारे मच्छर मर गए। दिखता नहीं है इसीलिए मजे से रह सकते हैं लेकिन जैसे ही लाइट ऑन करने से सब दिखता है, तब फिर अंदर ज़बरदस्त वह रहता है कि, ऐसा लगता है कि तलवार की नोक पर जी रहे हैं और अंदर ऐसा लगता है कि कब मोक्ष में जाएँ, कब मोक्ष में जाएँ।

दादाश्री : वह तलवार की धार जैसा यह मार्ग है। लेकिन अज्ञानता में था ऐसा दुःख नहीं रहेगा। जागृति की वजह से तलवार की धार का थोड़ा दुःख रहता है। तो ज़रा दुःख रहता है लेकिन सिर्फ सूक्ष्मता से जागृत रहना पड़ता है। और लक्ष्य में सब रखना

पड़ता है कि चंदू अब क्या कर रहा है? अब क्या पूरा हो चुका है?

ये सब क्या लक्ष्य में रहता है कि अब हमें यहाँ क्या करना है? बस, बस! तो वह काम अपने आप होता ही रहेगा, उसी अनुसार होगा। तय करना है कि यही करना है। सिर्फ यह लक्ष्यवाला काम ही और कुछ भी नहीं।

स्वरूप का चिंतन करे वह शुद्ध उपयोग

प्रश्नकर्ता : कहीं भी खुद की गलती रह गई है? वह देखता हूँ।

दादाश्री : उसे शुद्ध उपयोग कहते हैं। और सामायिक करते वक्त तो व्यवहार बंद करना पड़ेगा न? तू कितनी देर तक करता है?

प्रश्नकर्ता : ट्रेन में आने-जाने में एक घंटा लगता है। वह पूरा एक घंटा यों स्थिरतापूर्वक एनैलिसिस में बीतता है। रात में पौन घंटा, आधा घंटा, बैठकर हो पाता है, बस।

दादाश्री : गाड़ी में आते-जाते हुए करते हो?

प्रश्नकर्ता : उसमें डेढ़-डेढ़ घंटा मिलता है। यों तो निरंतर रहता है।

दादाश्री : कुछ इधर-उधर नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : मतलब थोड़ा सा चूक जाता हूँ लेकिन तुरंत प्रतिक्रमण करके, फिर उस पर चलता रहता है।

दादाश्री : रात को कितने बजे तक ऐसे सब विचार आते रहते हैं?

प्रश्नकर्ता : ठिकाना नहीं है, कितने बजे तक ऐसा कुछ पक्का नहीं है।

दादाश्री : ऐसा है न, यदि ऐसे विचार आएँ न, तो कितने ही कर्मों को भस्मीभूत कर देते हैं।

क्योंकि सामायिक भी इन विचारों की बराबरी नहीं कर सकती। आत्म हेतु है। सामायिक तो अलग चीज़ है, जो हो चुका है, वह चीज़ है। लेकिन यदि ऐसे विचार आएँ न, तो एकदम से सब भस्मीभूत कर देते हैं। और विचारों के बीच-बीच में अंदर संसार याद आता है? या सिर्फ विचारों की लिंक ही चलती रहती है?

प्रश्नकर्ता : यह जो विचार की लिंक रहती है, तब उसके और संसार के बीच कोई संबंध नहीं रहता।

दादाश्री : और कुछ नहीं आता इसलिए कह रहा हूँ कि यह सामायिक से भी उच्च है।...विचार बिल्कुल भी संसार हेतु के लिए नहीं हैं। आत्म हेतु के लिए हैं, प्योरली।

जगत् कल्याण की भावना रूपी सामायिक

दादाश्री : हम सभी ने भावना की कि लोगों को शांति मिले, शांति मिले। सतपुरुष का योगबल, जगत् का कल्याण करो, संतपुरुष का योगबल जगत् का कल्याण करो।

प्रश्नकर्ता : मैं रोज़ ऐसी सामायिक करता हूँ।

दादाश्री : सभी को करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो वे सारे परमाणु चेन्ज होकर फैल जाएँगे। एक-एक घंटा, आधा घंटा या पंद्रह मिनट के लिए भी यदि सभी महात्मा सामायिक करें न, तो उसके अनुसार काफी फर्क पड़ जाएगा।

दादाश्री : नीरू बहन, अपने यहाँ ऐसा सब करवाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : बहुत (भयंकर) कर्म खत्म हो जाएँगे। ऐसी सामायिक यदि हम आधा-पौना घंटा करें, तो इन परमाणुओं में बहुत फर्क आएगा, असर होगा।

दादावाणी

दादाश्री : आप सब का तो पूरा समय इसी में जाता है। लेकिन ये सभी अगर ज़ोर लगाएँ और ऐसी भावना करें तो काम हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : दादा तो अपनी तरफ से सब कर ही रहे हैं। फिर भी महात्मा अगर इतना करें, तो दादाजी जिस ध्येय के लिए, जिस सिद्धांत के लिए यह सब जो कर रहे हैं, उसमें कितना, सपोर्ट मिल जाएगा।

दादाश्री : वर्ना इस काल में तो पाँच लोग भी नहीं बच सकें, ऐसा काल है। लेकिन देखो न अपने तो कितने बच गए हैं। अपने महात्माओं को देखो न, आराम से हैं इतनी अगन में।

प्रश्नकर्ता : तो अब दादा के जगत् कल्याण के ध्येय के लिए सभी महात्माओं को ऐसा सब करना चाहिए न।

दादाश्री : वे सबकुछ करेंगे। आप करनेवाले या करवानेवाले नहीं हो, कोई भी हस्तक्षेप करनेवाले नहीं हो।

प्रश्नकर्ता : दादा अकेले कितना करेंगे बाकी सब को भी करना चाहिए न।

दादाश्री : हाँ! मैं वही कह रहा हूँ न! सहयोग तो चाहिए न!

प्रश्नकर्ता : सहयोग तो रहना ही चाहिए।

दादाश्री : कोई पराया है ही नहीं वहाँ।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। दादा को जो करना है, सभी को वह करना चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, सब तैयार ही हैं लेकिन कोई उत्साह बढ़ानेवाला नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हाँ उत्साह बढ़ानेवाला होना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, क्योंकि ज्ञान दिया हुआ है न इसलिए और बाकी हर तरह से प्योर। जब खुद का स्वार्थ हो तब भावनाएँ बाधा डालती हैं। अपने महात्माओं में ऐसा स्वार्थ नहीं है। (अपने महात्मा यानी) अब यह भावना करेंगे, तो फलीभूत हुए बगैर रहेगी ही नहीं न!।

देखनेवाले आप, साफ करनेवाला के चंदू

सबकुछ साफ करने लगे हो न? सारे रूम साफ करने लगे?

प्रश्नकर्ता : हाँ, साफ करने लगे हैं। बहुत जाले वगैरह हैं। ऐसा अब दिखाई देता है कि जाले कहाँ है। अंदर किसी कोनों में जमे हुए, सब दिखते हैं अब।

दादाश्री : देखनेवाले आप हो और साफ करनेवाले घर के मालिक हैं। साफ करके यदि वे कहें कि 'अब मैं आराम करूँ?' तब कहना है, 'नहीं, अभी तो यह बाकी है, सब खत्म (पूरा) हो जाए उसके बाद कर लेना।'

प्रश्नकर्ता : दादा आप यों सारा जागृत कर रहे हैं न, आज-कल आप लगातार जागृति दे रहे हैं न, इसलिए अंदर ऐसा हो गया है कि बाहर का कुछ देखने का समय ही नहीं है। अंदर का ही अंत आए ऐसा नहीं है।

दादाश्री : अंदर का अंत नहीं आए, ऐसा.....

प्रश्नकर्ता : बाहर चुभने जैसा कुछ है ही नहीं। लगता है कि अंदर ही देखें। बाहर चुभने जैसा कुछ है क्या?

दादाश्री : बाहर कुछ भी नहीं है। बाहर तो काम ही नहीं है। काम तो सारा अंदर है।

प्रश्नकर्ता : इसलिए अगर बाहर का देखने में रहेंगे न तो अंदर का नहीं कर पाएँगे।

दादावाणी

दादाश्री : जब तक वह बाहर का देखता है, तब तक उसके लिए अंदर जगह है ही नहीं। लेकिन अंदर जाएँ।

प्रश्नकर्ता : अंदर जाएँ तो बाहर...

दादाश्री : बंद हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : बंद हो जाएगा। अपने आप बंद हो जाएगा। यानी बैराग लाने की जरूरत ही नहीं पड़ती। अपने आप ही मोह-वोह छूट जाते हैं।

दादाश्री : सामायिक अर्थात् अंतर दृष्टि करना है। अंदर का दिखे उसे सामायिक कहते हैं। और बाहर का दिखे उसे संसार कहते हैं। अंदर गहराई में देखने के बाद बाहर की चीजें न दिखें, सारी अंदर की ही दिखे, वह सब सामायिक कहलाती है।

समत्व में रहना, वह सामायिक

आत्मा समत्व श्रेणी को चूके नहीं, उसे सामायिक कहते हैं। बाहर चंदूभाई चिढ़ते हैं लेकिन अंदर आपको ऐसा होता है कि 'यह ठीक नहीं है' तो समत्व श्रेणी उत्पन्न हो गई। एक का प्लस और एक का माइनस, तो हो गया समत्व।

प्रश्नकर्ता : समत्व हाँ, प्लस-माइनस हो गया।

दादाश्री : आत्मा की समत्व श्रेणी, वही सामायिक है।

अब इस ज्ञान को पूर्णता तक पहुँचा देना चाहिए। पूर्णता तक पहुँचाने का ध्येय रहना चाहिए। यानी एक भी कोना कमजोर न रह जाए, तब पूर्णता होगी। लेकिन हर एक कोर्नर से तुरंत देखना चाहिए कि पूर्णता का एक भी आधार, कोई भी कोर्नर कमजोर नहीं रह जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : एक भी कोना कमजोर नहीं रहना चाहिए।

दादाश्री : पूरा न हो, तो कोई हर्ज नहीं है। हर एक कोर्नर से आगे बढ़ना चाहिए। आपका तो अच्छा जम गया है।

प्रश्नकर्ता : दादा, दिनोंदिन आनंद बढ़ता जा रहा है।

दादाश्री : बढ़ेगा ही न, नहीं तो और क्या होगा? समत्व श्रेणी बढ़ती जाती है और आनंद प्रकट होता जाता है आनंद बढ़ता जाता है दिनोंदिन।

- जय सच्चिदानंद

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वीं तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पिनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं., पूरा नाम-पता, पिनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेल आइडी पर इ-मेल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

१३-१४ जून : सेफ्रोनी मेहसाणा में गुजरात के तमाम सेन्टरों के एवं अडालज संकुल के विविध प्रवृत्तियों के मुख्य कोर्डिनेटरों के लिए वार्षिक वर्कशोप का आयोजन हुआ। कुल मिलाकर २८० कोर्डिनेटरों ने हिस्सा लिया। सेन्टरों के लिए विविध प्रकार की मार्गदर्शिका तैयार करके सेन्टरों को और भी प्रवृत्तिमय एवं प्रगतिशील बनाने के लिए वर्क शोप के दौरान क्वीज़, चर्चा, नाटक, अपडेट्स और पूज्य श्री के सत्संग का आयोजन हुआ। अंत में दर्शन के समय कोर्डिनेटरों ने पूज्य श्री के साथ अपने दिल की बातें की।

२३-२४ जून : ब्राज़िल के रियो शहर के एरपोर्ट) पर स्थानिक महात्माओं ने ब्राज़िल का ध्वज एवं पारंपारिक टोपी भेंट देकर पूज्य श्री का गरमजोशी से स्वागत किया था, और ब्राज़िल में प्रथम बार पूज्य श्री के आगमन से धन्यता का अनुभव किया था। पूज्य श्री ने स्थानिक महात्माओं के साथ इनफोर्मल समय बिताया और कार्कोवाडो पर्वत की चोटी पर आए हुए विश्व विख्यात 'क्राइस्ट द रीडिमेर' स्मारक देखने गए थे।

२५-२८ जून : साउथ अमरीका के साल्वाडोर शहर में प्रथम बार पूज्य श्री की निश्रा में चार दिवसीय सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रथम दिन ब्राज़िल के विविध बड़े शहरों से कई नए मुमुक्षुओं की उपस्थिति रही। उनमें से ९० प्रतिशत लोग दादाश्री की पुस्तक 'सेल्फ रियलाइजेशन' पढ़कर आए थे। अन्य कई मुमुक्षु भी इन्टरनेट पर दादाश्री की पुस्तकें पढ़कर आए थे। पूज्य श्री द्वारा प्रश्नोत्तरी सत्संग हुआ, जिसमें नए मुमुक्षुओं को समाधानकारी जवाब मिले थे। प्रथम दिन सत्संग के दो सेशन रखे गए थे। बाद में शाम को गरबा का कार्यक्रम आयोजित हुआ। सारे शिविरार्थी पूज्य श्री के साथ दादाई भक्ति में झूमकर नाच उठे थे। २७ तारीख की सुबह ज्ञानविधि में ३७० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ज्ञानविधि अंग्रेजी भाषा में की गई थी। उसके बाद पाँच आज्ञा की समझ वहाँ की स्थानिक भाषा पोर्तुगीज़ में अनुवाद करके समझाई गई थी। ज्ञानविधि के बाद पूज्य श्री के दर्शन का कार्यक्रम रखा गया था। पूज्यश्री के दर्शन करके ब्राज़िल के महात्मा धन्य हो गए थे। 'पाँच आज्ञा का महत्व' और भी ज्यादा समझने के लिए ब्राज़िल के महात्मा उत्सुक थे। इसलिए ज्ञानविधि के बाद भी सत्संग का आयोजन किया गया था। ब्राज़िल के ५-६ बड़े शहरों में सत्संग सेन्टरों की शुरुआत होनेवाली है। ज्ञान लिए हुए कई महात्मा को गुरुपूर्णिमा के लिए फिनक्स (यू.एस.ए) जाने के लिए तैयार हैं।

३० जून-२ जुलाई : पूज्यश्री के अमरीका सत्संग प्रवास की शुरुआत ह्युस्टन शहर से हुई थी। १०० से भी अधिक स्थानिक महात्माओं ने पूज्य श्री का एरपोर्ट पर भव्य स्वागत किया था। उस शाम महात्माओं ने पूज्य श्री के साथ इन्फोर्मल समय बिताया था। सत्संग के पहले दिन कई नए मुमुक्षु आए थे और प्रश्न पूछे थे। ज्ञानविधि में २३२ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया, जिनमें लगभग ६० अन्य भाषी मुमुक्षु थे। ज्ञानविधि के दूसरे दिन आप्तपुत्र द्वारा फोलो अप सत्संग में नए ज्ञान लिए हुए महात्माओं की संख्या काफी अच्छी थी।

३-६ जुलाई : भारत से बाहर विदेश में और अमरीका की धरती पर प्रथम बार न्यू जर्सी में परम पूज्य दादा भगवान प्रेरित निष्पक्षपाती त्रिमंदिर का भूमि पूजन (खात-मुहूर्त) पूज्य श्री दीपकभाई के वरद हस्तों द्वारा तारीख ४ जुलाई २०१५ के दिन किया गया। योगानुयोग इस दिन अमरीका देश का स्वतंत्रता दिवस है। स्थानिक महात्मा एवं महानुभावों के अलावा देश-विदेश से भी बड़ी संख्या में महात्मा पधारे थे। पूज्यश्री ने पूजन-विधि करने के बाद फावड़े से खोदकर, नींव की प्रथम इंट रखकर शगुन के तौर पर सिमेन्ट द्वारा चुनाई काम का शुभारंभ किया था। तत्पश्चात इस त्रिमंदिर का निर्माण कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो इसलिए प्रार्थना करवाई थी, कार्यक्रम में पधारे हुए आमंत्रित मेहमानों ने एवं महात्माओं ने अपनी शुभेच्छाएँ-भावनाएँ प्रस्तुत की और अनुभव भी कहे थे। अंत में स्वामी एवं दादा की आरती की गई थी। न्यू जर्सी में ३ तारीख से सत्संग की शुरुआत हुई थी, जिसमें लगभग १५०० महात्माओं की विशाल उपस्थिति से मानो मीनी गुरुपूर्णिमा हो, ऐसा वातावरण बन चुका था। ५ जुलाई के दिन ज्ञानविधि में २८० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

८-१० जुलाई : ८ साल के लंबे अंतराल के बाद बोस्टन, लोवेल सेन्टर में सत्संग-ज्ञानविधि के साथ मीनी शिविर जैसा आयोजन किया गया था। इस बार सत्संग नई जगह पर रखा गया था, जो काफी सफल रहा। वर्किंग डे होने के बावजूद भी १८५ मुमुक्षुओं ने ज्ञानविधि द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्य श्री ने महात्माओं के साथ सत्संग के अलावा इनफोर्मल समय भी बिताया, जिसमें पिकनिक, हल्का-फुल्का सत्संग, गरबा एवं दादा दरबार के कार्यक्रम रखे गए थे। पिकनिक में छोटे बच्चों ने स्वागत पद के साथ सुंदर नृत्य भी प्रस्तुत किया था। ८ जुलाई पूज्य नीरू माँ के ज्ञान दिवस पर पूज्य श्री की उपस्थिति से नीरू माँ की कमी पूरी हो गई हो ऐसा महात्माओं को अनुभव हुआ था।

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

दिल्ली	दि : 29 अगस्त	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 8130444088
स्थल : 171, संदेश विहार, पीतमपुरा, M.M पब्लिक स्कूल के पास.			
दिल्ली	दि : 30 अगस्त	समय : सुबह 10 से 12	संपर्क : 9911274715
स्थल : E-78, सरिता विहार, अग्रवाल स्वीट्स के पास, अपोलो हॉस्पिटल खादर मोड, नई दिल्ली.			
दिल्ली	दि : 30 अगस्त	समय : शाम 5-30 से 8	संपर्क : 9999533946
स्थल : कॉम्युनिटी होल, GH-9 पश्चिम विहार, नई दिल्ली.			
हिसार	दि : 31 अगस्त	समय : शाम 5 से 7-30	संपर्क : 9812025423
स्थल : श्री बुधला संत हनुमान मंदिर, ऋषिनगर, बस स्टेन्ड के पास, हिसार.			
कुरुक्षेत्र	दि : 1 सितम्बर	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9671868450
स्थल : भगवान परशुराम कॉलेज, मेन मार्केट, सेक्टर नं.-5, हुडा, कुरुक्षेत्र.			
पानीपत	दि : 2 सितम्बर	समय : शाम 6 से 8-30	संपर्क : 9467130414
स्थल : मनोरंजन केन्द्र, NFL टाउनशीप, पानीपत.			
आगरा	दि : 3 सितम्बर	समय : शाम 4-30 से 7	संपर्क : 9319128468
स्थल : C4/107, कचेरी घाट, आगरा.			
फरीदाबाद	दि : 4 सितम्बर	समय : शाम 5 से 8	संपर्क : 9501009538
स्थल : हाउस नं. 326, सेक्टर नं-9, डी.सी. मोडेल स्कूल और चर्च के पास, फरीदाबाद.			
गाजियाबाद	दि : 5 सितम्बर	समय : दोपहर 3 से 5-30	संपर्क : 9968738972
स्थल : श्री साईं वाटिका मंदिर, सेक्टर नं-17, 'इ' ब्लोक के पास, कोनार्क एनक्लेव, वसुंधरा, गाजियाबाद.			
दिल्ली	दि : 6 सितम्बर	समय : सुबह 10 से 12-30	संपर्क : 9868376757
स्थल : C-224 डिफेन्स कोलोनी, साऊथ दिल्ली.			
गुडगाँव	दि : 6 सितम्बर	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 9810307602
स्थल : शनि मंदिर, सेक्टर नं-31, गायत्री मंदिर के सामने, गुडगाँव.			
जालंधर	दि : 30 अगस्त	संपर्क : 9814063043	धरमशाला दि : 2 सितम्बर संपर्क : 9805254559
मोगा	दि : 31 अगस्त	संपर्क : 9872970623	चंडीगढ़ दि : 4 सितम्बर संपर्क : 9872188973
अमृतसर	दि : 1 सितम्बर	संपर्क : 9872298125	जालंधर केन्द्र दि : 5-6 सितम्बर संपर्क : 9779233493

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	+ 'आस्था' पर सोम से शनि रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
	+ 'डीडी'-इन्डिया पर हर रोज सुबह १० से १०-३० तथा रात १०-३० से ११ (हिन्दी में)
	+ 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
	+ 'दूरदर्शन'-गिरनार पर हर रोज सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
	+ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
	+ 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)
USA	+ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में इस्ट आफ्रिका के आगामी सत्संग कार्यक्रम

दार-ए-सलाम

दि. २१-२२ अक्टूबर (बुध-गुरु), रात ८ से १० - सत्संग तथा २३ अक्टूबर (शुक्र) शाम ५-३० से ९-३० - ज्ञानविधि
स्थल : डायमंड ज्युबिली होल, मलिक रोड, दार-ए-सलाम, टान्झानिया. संपर्क : 689005354, 687980019

मोम्बासा

दि. २४ और २६ अक्टूबर (शनि-सोम), रात ८ से १० - सत्संग तथा २५ अक्टूबर (रवि) शाम ४-३० से ८ - ज्ञानविधि
स्थल : श्री विसा ओशवाल वणिक कम्प्युनिटी, होटेल सफायर के पास, MT रोड. संपर्क : 722372424

नैरोबी

दि. २७-२८ अक्टूबर (मंगल-बुध), रात ८ से १० - सत्संग तथा २९ अक्टूबर (गुरु) शाम ५-३० से ९-३० - ज्ञानविधि
स्थल : ओशवाल सेन्टर (रींग रोड पार्कलेन्ड), उकेय सेन्टर के सामने. संपर्क : 733923232, 711923232

परम पूज्य दादा भगवान का 108वाँ जन्मजयंती महोत्सव - पूणे शहर में

स्वागत समारोह : २४ नवम्बर, - शाम ५ बजे से....

जन्मजयंती : दि. २५ नवम्बर, सत्संग शिविर : दि. २४ से २९ नवम्बर

सेवाथी सत्संग : दि. २७ नवम्बर - सुबह १० से १२-३०, ज्ञानविधि : दि. २८ नवम्बर - शाम ५ से ८-३०

स्थल : मुलिक पेलेस ग्राउन्ड, कल्याणीनगर, द बीशोप स्कूल के सामने, पूणे. संपर्क : 7218473468

इस बार जन्मजयंती महोत्सव के दौरान समग्र सत्संग तथा ज्ञानविधि कार्यक्रम हिन्दी में होंगे।

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत
- + 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर हर रोज रात ९-३० से १० (हिन्दी में) (नया कार्यक्रम)
 - + 'साधना' पर हर रोज शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
 - + 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
 - + 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
- USA
- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST
 - + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० EST (हिन्दी में)
- UK
- + 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में)
- Singapore
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)
- Australia
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)
- New Zealand
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
- USA-UK-Africa-Aus. + 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)
- त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, गोधरा : 9723707738,
मोरबी : (02822)297097, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460,
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद : (079) 27540408, मुंबई : 9323528901, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335,
दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830006376
यु.के. : +44 330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा : +1 877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया : +61 421127947

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

दि. २२ अगस्त (शनि), शाम ४ से ७ - सत्संग तथा २३ अगस्त (रवि), शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि
दि. २४ अगस्त (सोम), शाम ४ से ७ - आप्तपुत्र सत्संग
दि. ५ सितम्बर (शनि), रात १० से १२ - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति

जयपुर

दि. २५ अगस्त (मंगल), शाम ५-३० से ८-३० - सत्संग तथा २६ अगस्त (बुध), शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि
दि. २७ अगस्त (गुरु), शाम ६ से ८-३० - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : उत्सव होल, पी-10, सेक्टर - 2, विद्याधरनगर, जयपुर (राजस्थान). संपर्क : 8233363902

नागपुर

दि. २८-२९ अगस्त (शुक्र-शनि), शाम ५ से ८ - सत्संग तथा ३० अगस्त (रवि), शाम ४-३० से ८ - ज्ञानविधि
दि. ३१ अगस्त (सोम), शाम ५ से ८ - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : वसंतराव देशपांडे होल, आमदर निवास के सामने, सिविल लाइन्स, नागपुर, (महाराष्ट्र). संपर्क : 8421680086

अमरावती

दि. १ सितम्बर (मंगल), शाम ६ से ९ - सत्संग तथा २ सितम्बर (बुध), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि
दि. ३ सितम्बर (गुरु), शाम ६ से ९ - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : संत ज्ञानेश्वर सांस्कृतिक भवन, ITI कोलेज के सामने, मोर्शी रोड (महाराष्ट्र). संपर्क : 9422335982

दिल्ली

दि. २५-२६ सितम्बर (शुक्र-शनि), शाम ५-३० से ८-३० - सत्संग तथा २७ सितम्बर (रवि) शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि
दि. २८ सितम्बर (सोम), शाम ५-३० से ८-३० - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : मैडन्स क्राउन बेन्क्वेट्स, B-1, पीरागढ़ी चौक, पीरागढ़ी मेट्रो स्टेशन के सामने, नई दिल्ली. संपर्क : 9810098564
विशेष सूचना : दिल्ली सत्संग में जो व्यक्ति बाहर से आ रहे हैं और उन्हें रहने की सुविधा की आवश्यकता है, वे सीधे आवास स्थल - महाराजा अग्रसेन भवन, ज्वाला हेरी चोक, पश्चिम विहार पर पहुँचें। ज्यादा जानकारी हेतु 9811332206 पर संपर्क करें।

जालंधर

दि. २९ सितम्बर (मंगल), शाम ४-३० से ७-३० - सत्संग तथा ३० सितम्बर (बुध) शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि
दि. १ अक्टूबर (गुरु), शाम ४-३० से ७-३० - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : देश भगत यादगार होल, जी.टी. रोड, जालंधर. संपर्क : 9814063043

अडालज त्रिमंदिर में पर्युषण पारायण

१० से १७ सितम्बर (गुरु से गुरु) पर्युषण पारायण - आप्तवाणी ३ तथा १३ (पू.) पर वांचन-सत्संग प्रश्नोत्तरी
१८ सितम्बर (शुक्र) सुबह ९ बजे से - दर्शन का विशेष कार्यक्रम
पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-३ और १३ (पू.) (गुजराती) किताबों का वाचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समझ सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते हैं।)

अगस्त 2015
वर्ष - 10 अंक - 10
अखंड क्रमांक - 118

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

निरंतर सामायिक की तो बात ही अलग है न!

हम अड़तालीस मिनट करते हैं वह तो सामायिक कहलाती ही है लेकिन योंही अगर रास्ते में भी किसी से झगड़ा हो जाए, तो उस घड़ी सामायिक कर लेनी चाहिए, समत्व में आ जाना। जहाँ भी ऐसा हो, वहाँ समत्व में आ जाना। अपना मार्ग यही है न, समभाव। अपना पूरा मार्ग सामायिक का ही है। सामायिक का, आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान का यह मार्ग अर्थात् अपना यह अंतिम मार्ग है। हमें तो चौबीस घंटे उसी भाव में रहें, उसके जैसा तो एक भी नहीं है न! उसकी तो बात ही अलग है न! अरे, अपने ये जो सामायिक-प्रतिक्रमण जो करते हैं, वे तो बहुत कीमती हैं। उन्हें दो-दो, तीन-तीन घंटे तक तो जगत् याद ही नहीं रहता बिल्कुल भी और (खुद के) दोष ही दिखते रहते हैं। दोष दिखने से वे दोष चले जाते हैं। वह जीवंत प्रतिक्रमण कहलाता है।

-दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.